

श्रीः ।

षट्पञ्चाशिका

श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशा  
विरचिता ।

पं-रामकृष्णशर्मकृतया

सुबोधिनीभाषाटीकया समलंकृता ।

सा च

क्षेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवङ्केश्वर" (स्टीम) यन्त्रालये  
मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

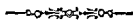
शके १८२२, सवत् १९५७.

रजिस्ट्रीका हक 'श्रीवेङ्केश्वर' यन्त्रालये स्वामीन रक्खाहे

श्रीः ।

# षट्पञ्चाशिका

भाषाटीकासहिता ।



श्लोकः ।

प्रणम्य लंबोदरमादरेण सूर्यादिदेवान्स्व-  
गुरुंश्च नत्वा ॥ सुबोधिनीं नाम करोमि  
टीकां विद्यार्थिनां शीघ्रसुबोधनाय ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थारम्भः ।

प्रणिपत्य रविं मूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन-  
पृथुयशसा ॥ प्रश्ने कृतार्थगहना परार्थमु-  
द्दिश्य सद्यशसा ॥ १ ॥

टीका—वराहमिहिराचार्यका जो मैं पृथुनाभ पुत्र हूँ  
॥ ० रवि जो सूर्य तिनको मस्तक झुकायके नमस्कार

करताहूं. किसके अर्थ? प्रश्नकी जो विद्या है ताको संसारके विषे जो लोक हैं तिनहैं शीघ्रहीसे प्राप्त होय तिनके अर्थ. कैसे हैं वे पृथु कि निर्मल हे यश जिनका, और भूतविद्याके सूर्य्य हैं गुण जिनके ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्नाद्धिवुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासोस्त  
मयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यंग्रहैःप्रश्रविलग्नका-  
लाद्गृहंप्रविष्टोहिवुकेप्रवासी ॥ २ ॥

टीका—( च्युतिर्विलग्नात्— ) प्रथम लग्न जो है ताते इतनी बात कहनी चाहिये; ग्रामका चलना, मेघकी वर्षा, बन्दिमोक्ष अर्थात् कैदसे छूटना इतनी वस्तु लग्नसे देखनी चाहिये. जो चर लग्न होय अथवा चरराशि होय तो पराये ग्रामसे चलै. मेघकी वर्षा पूछे तो मेघकी वर्षा होय और बन्दी मोक्षकी पूछे तो बन्दी बन्धनसे छूटे और जो स्थिर राशि होय तो पहिले कार्य्य न होय संपूर्ण कार्य्य स्थिर अर्थात् देरसे होय ॥ ( हिवुकाच्चवृद्धिः ) हिवुकु कहिये चौथे स्थानमे इतनी बातोंकी वृद्धि.

भाषाटीकासहिता ।  
 होती है संतानादिककी वृद्धी, घोडा, बैल, अन्न, वस्त्र, विवाह  
 आदि और जो संपूर्ण प्रश्नोंका विचार चतुर्यम्वनसे  
 समझलेना चाहिये कि चर लग्न है वा चरके नवमां-  
 रामें होय तौ वृद्धि कहिनी और स्थिर होय तौ  
 देरसे कहिये ॥ ( मध्यात्प्रवासः ) मध्यनाम दशम स्था-  
 नका है जो कोई परदेशीका प्रश्न करै कि कब आवैगा  
 तौ शीघ्र आवे चरसे और चरांशसे; और स्थिरसे देरसे  
 आवै. चर और चरांशसे राजाकी फौजमें गया  
 होय पूछै कब आवैगा तौ चरसे और चरांशसे शीघ्रही  
 आवे, और स्थिर राशिसे और स्थिरांशसे देरमें कहौ  
 और जिस राशिका स्वामी होय इतनेही दिनमें आवना  
 कहौ आवैगा और जो निकट दस कोसपर होय तौ  
 जितने दिनमें चंद्रमा केन्द्रमें आवै तितनेही देरमें आवे चं-  
 द्रमासरिस प्रवासी घरमें आवै ॥ अब सप्तमस्थानसे विचार  
 कहते हैं इतनी वस्तु सप्तमस्थानसे विचार करना योग्य है  
 ग्रामसे चलना, रोगी मरेगा कि नहीं, कष्ट दूर होगा

प्र (९) पट्टपञ्चाशिका १२५

नहीं, गई वस्तु मिलेगी कि नहीं, ये सब बातें सप्तमस्थानसे  
विचारनी चाहिये और जो स्थिरराशि होय तौ निवृत्ति  
और जो चर होय तौ प्रवृत्ति कहना और जो लग्नका  
स्वामी देखता होय तौ कार्य होगा. प्रश्नलग्नसे १० में  
३ तीसरे ५ विश्वे, ९ वें ५ वें १० विश्वे, ० अथवा  
४ वा ८ विश्वे १५ और ७ वें विश्वे २० कार्य हो-  
यगा ॥ और तनुस्थानसे तनुकी ॥ धनस्थानसे  
वनकी ॥ सहजस्थानसे भाई बहिनका ॥ मित्रस्थानसे  
गोडा, खेती, चतुर्थस्थानसे ॥ बेटाबेटी; गर्भ, विद्या, सुत-  
स्थानसे ॥ वैरी, गाय, बैल, भैंस, रिपुस्थानसे ॥ स्त्री,  
बनिज, झगडा, विवाह सप्तमस्थानसे ॥ बावडी, कूआ,  
तलाव अष्टमस्थानसे ॥ धर्म करना नवमस्थानसे ॥  
राज्य, क्रिया, पिताका प्रश्न दशमस्थानसे ॥ व्याज,  
द्रव्यलाभ, पांडित्य, वाद, विवाद ये एकादशस्थानसे  
अर्थात् एकादश भवनसे ॥ विवाह, कर्कशकर्म, व्यय  
अर्थात् खर्च ये संपूर्ण विचार द्वादशभवनसे जानने  
चाहिये ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा  
 स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरे-  
 वं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां  
 जन्मतो वा ॥ ३ ॥

टीका—एक लग्नके द्वादश भाव होते हैं सो जिसजिस  
 भावका स्वामी अपने घरको देखता होय अथवा बैठा  
 होय तिस २ भावकी वृद्धि करै है. सौम्य ग्रह होय अथवा  
 क्रूर ग्रह होय तौ वृद्धि करै अथवा पापी देखै तो प्रश्न  
 भावकी हानि करै ॥ अब शुभ ग्रह कितने हैं सो कहते  
 हैं ॥ बुध, बृहस्पति, शुक्र और शुक्रपक्षका चंद्रमा  
 पाप ग्रह क्षीण चंद्रमा, सूर्य, मंगल, शनैश्वर, राहु, केतु  
 और जो ये ग्रह बुध शुक्रसहित होंय तौ शुभग्रह कह  
 ना चाहिये । यदि पापग्रह संग होंय तौ पापी कहना  
 और जातकमेंभीइसी प्रकार जानना. शुभ ग्रह शुभ-  
 कर्ता और पापग्रह हानिकर्ता होतेहैं ॥ ३ ।

अथ कार्यशुभाशुभविचारमाह ।

सौम्येविलग्न्येदिवास्यवर्गेशीर्षोदयेसिद्धिमु-  
पैतिकार्यम् ॥ अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः  
कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका—जो प्रश्नके समय तात्कालिक लग्नमें शुभग्रह  
बैठा होय अथवा शुभ ग्रहकी राशि या घरमें होय और  
शीर्षोदय लग्नमें होय शीर्षोदय लग्न ये हैं ५ । ६ । ७ । ८ ।  
११ ये होंय तो कार्यकी सिद्धि कहिये और ये न होंय अ-  
थात् उलटे होंय तो कार्यका नाश कहिये और जो मिली  
होंय तो बडे कष्टसे कार्य होगा. ये सब बातें शुभाशुभ-  
ग्रहकी अधिकता देखकर फल कहनी चाहिये ॥ ४ ॥

अथ नष्टवस्तुलाभज्ञानमाह ।

कोणस्थितःपूर्णतनुःशशांकोजीवेनदृष्टोय-  
दिवासितेन ॥ क्षिप्रं प्रणष्टस्यकरोतिलब्धि  
लाभोपयातो बलवाञ्छुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि गई गई वस्तु मिलेगी कि नहीं ? तब लग्नका विचार करिये. जो लग्नमें परिपूर्ण चंद्रमा बैठा होय वा अपनी होरामें बैठा होय वा बृहस्पति वा शुक्र देखता होय तो गई वस्तु शीघ्रही मिले अथवा शुभ ग्रह ग्यारवें स्थानमें बैठा होय तोभी गई वस्तुकी प्राप्ति होय. अब चंद्रमाका बलत्व कहते हैं. शुक्लपक्षकी पडिवासे लेके दशमीताई चंद्रमा क मध्यबल होता है और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमीतक चंद्रमा पूर्णबल होता है फिर पंचमीसे लेके अमावास्यातक चंद्रमाका बल क्षीण होता है. बलवान् चंद्रमा होनेपर में कार्यकी लाभ होती है और क्षीणमें कार्यका नाश होता है और मध्यबलमें देरीसे कार्य होता है अथवा कार्य होय या नहीं होय इन दोनों बातोंकोभी करता है सो कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ मूकप्रश्नः ।

स्वांशेविलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितःप-



( १० )

पट्टपञ्चाशिका ।

इयतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरो-  
तिजीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी चिंता क्या है कहिये तब जो लग्नमें जैसे ग्रहकी मूर्ति होय तो तत्काल उसी लग्नका नवांशक देखिये वर्तमानका होय तो धातुकी चिंता कहिये और जो सूर्यका अंश होय तो मोतीका प्रश्न कहिये और शुक्र व चंद्रमाका अंश होय तो रूपा कहिये और बुधका अंश होय तो सुवर्ण कहिये और बृहस्पतिका अंश होय तो सुवर्ण रत्नजटित कहिये मंगलका अंश होय तो जस्त कहिये वा ताँबा कहिये शनैश्वरका अंश होय तो लोह कहिये राहुका अंश होय तो पीतर कहिये, केतुका अंश होय तो कांच कहिये अथवा सीसा कहिये, और जो लग्नपति होय तांतं जानिये, और जो लग्नका नवांशक होय तो धातु कहिये और लग्नसे दूसरा नवांशक वा छठीलग्नका नवांश वा दशवें लग्नका नवांशक होय तो जीवचिंता कहिये

और तीसरे वा ७ वे वा ग्यारहवे लग्नका नवांश होय  
 तौ मूलकी चिंता कहिये. लग्नसे चौथे स्थानमें धातु,  
 आठ वेंमें जीव नवममें मूल ऐसे प्रश्न जानिये ॥ ६ ॥

धातुंमूलंजीवमित्योजराशौ युग्मेविद्यादे-  
 तदेवप्रतीपम् ॥ लग्नेयोशस्तत्क्रमाद्गण्यए-  
 वसंक्षेपोयंविस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इतिवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायांषट्पंचाशि-  
 कायांहोराध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि मेरे मनकी बात कहौ  
 तब विषमराशिसे विचार करै सो विषम कोनकोनसी  
 राशि हैं सो कहितेहैं. मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन,  
 कुंभ ये विषम राशि हैं इनका नवमांश देख कर कहे. पहिले  
 नवमांशसे १ धातु, दूसरेसे २ मूल, तिसरेसे ३ जीव,  
 चौथेसे ४ धातु, पांचवेंसे ५ मूल, छठेसे ६ जीव, सातवेंसे ७  
 धातु, आठवेंसे ८ मूल, नवमसे ९ जीव और विषम  
 लग्नको काम, पहिले धातु और सम लग्नको काम,

( १५ ) ३१-२ पट्टपञ्चाशिका । २ ६५३

जीव, दूजे मूल, तीजे धातु चौथे जीव, पाँचवें मूल  
छठे धातु, सातमें जीव, आठमें मूल, नवमें धातु केवल  
इसी प्रकार सब जानिये ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायाषट्पञ्चाशिकायां  
सुबोधिनीटीकायां होराध्याय.प्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वृद्धिस्थानं गमागमौन  
स्तः ॥ नमृतं नचापिनष्टं नरोगशांतिर्नचा  
भिभवः ॥ १ ॥

टीका—वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, ये स्थिर लग्न हैं इन चारों  
लग्नों में जो वस्तु खोय जाय तो वह नहीं कहीं जाय  
इन लग्नों में और स्थानकी वृद्धि कहना और जो आ-  
नेवाला है सो आवेगा नहीं और रोगी मरेगा नहीं, न  
रोगीका रोग शांति होयगा और शत्रुके विषे पूछे तो उससे  
पराजय भी नहीं होगा. ये संपूर्ण काम स्थिर हैं.  
जो मेष, कर्क, तुला, मकर इन चर लग्नों में पूछे

तौ ग्रामके चलवेवारो चले परदेशी वेग आवे और रोगी मरे, नष्ट वस्तु मिले नहीं, जिसको डर होय सो बेरी होय. ये चर लग्नके गुण हैं. अब द्विस्वभावके गुण कहते हैं. मिथुन, कन्या, धन, मीन ये चार लग्न द्विस्वभाव हैं. इन लग्नोंका पहिला आधा चर भाग चरके फलको देता है और दूसरा आधा स्थिरभाग स्थिरके फलको देता है. जो चरका भाग होय तो शीघ्र फलके देनेवाला है और स्थिरभागमें कार्य देरसे होय और चर स्थिर होय तो मध्यम फल होय अथवा मिश्रित फल होय ॥ १ ॥

तद्विपरीतंतु चरैर्द्विशरीरैर्मिश्रितं फलं भवति ॥ लग्नैर्द्वोर्वक्तव्यं शुभदृष्ट्या शोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो चंद्रमा लग्नको देखता होय वा लग्नमें स्थित होय तो कार्यसिद्धि

अथवा शुभग्रह देखते होंय तौ विवाहादिक शुभ कार्य सिद्धि होय और जो क्रूरग्रह देखते होंय तौ शुभ कार्यका नाश होवे कार्य नहीं होंय. धरी वस्तु मिलै नहीं, चोरी मिले नहीं, युद्ध जीते नहीं, जुआ जीते नहीं, चर शुभग्रहमें शुभ और क्रूर ग्रहमें कार्यका नाश करै अथवा क्रूर कार्य होय और मिश्रितमें मिश्रित फल कहना ॥ २ ॥

अथ शत्रोर्मार्गान्निवृत्तिज्ञानमाह ।

सुतशत्रुगतैः पापैः शत्रुमार्गान्निवर्त्तते ॥

चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुभ्रमोनिवर्त्तते ॥ ३ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता वैरीका प्रश्न करै आवैगा कि नहीं? तो लग्नसे पांचवें और छठे घरमें पापग्रह पडें होंय तो वैरी मार्गमें है; आवै है; परंतु घरको लौट जायगा और लग्नसे चौथे स्थानमें पाप ग्रह पडे होंय तो वैरी आयके युद्ध करैगा परंतु भाग जायगा. आवते देर नलगे और भागते भी देर न लगेगी. यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

३३

अत्रैवान्यत्रयोगांतरमाह ।

झपालिकुंभकर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥  
रिपोः पराजयस्तदाचतुष्पदैः पलायनम् ॥४॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता वैरीकी वार्ता पूछे आवेगा कि नहीं तो जो मीन, वृश्चिक, कुंभ, कर्क ये चरलग्न चौथे स्थानमें पडीहोंय तो वैरी भागिजाय और हारीजाय. और जो चतुष्पद लग्न सातवें वा चौथे स्थानमें पडे अथव मेष, वृष, सिंह तो वैरी भागजाय. और जो मकरका पूर्वार्द्ध मेष, सिंह, वृष, और धनुका उत्तरार्द्ध होय तोभी शत्रु भागजाय, यह फल कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ यायिनांशुभाशुभज्ञानमाह ।

चरोदये शुभः स्थितः शुभंकरोतियायिनाम् ॥  
अशोभनैरशोभनंस्थिरोदयेपिवाशुभम् ॥ ५ ॥

टीका—जो चर लग्न मेष, कर्क, तुला, मकर इनमें प्रश्नकर्ता प्रश्न करे और शुभग्रह स्थित होंय वा देखते होंय

५०३

तो वैरीका दल आवेगा सेना साजिके, और गढपती हारेगा. और जो स्थिर लग्न होय और क्रूरग्रह स्थित होय या देखता होय तो पहिली सेना जो आई होय सो हार जाय और गढपति जीते. पहिली सेनाका क्षयहोय. और जो स्थिर लग्न होय शुभग्रह देखता होय तो लडाईमें दोनों बराबर हैं. न वह जीतै, न वह हारै ॥ ५ ॥

अथ शत्रोरागमनार्थज्ञानमाह ।

स्थिरे शशी चरोदयेनचागमोरिपोर्यदा ॥

तदागमंरिपोर्वदेद्विपर्यये विपर्ययम् ॥ ६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि वैरी कब आवेगा तब वाही समय जो स्थिरराशिपर चंद्रमा बैठा होय और प्रश्नका लग्न चरहोय तो वैरी नहीं आवेगा. और स्थिर लग्न होय और चंद्रमा चर राशिका होय तो वैरी अवश्य करिके आवेगा. और जो स्थिरलग्न होय और द्विस्वभाव राशिपर चंद्रमा होय तो वैरी आवतो होय परंतु मार्गहीसे घरको लौटिजाय ऐसा फल कहिये ॥ ६ ॥

शत्रोर्विनिवृत्तिज्ञानमाह ।

स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचंद्रमाः ॥

निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोपिसन् ॥७॥

टीका—यहां जो पहिलेही कहि आये हैं ताही भांति  
 केर कहतेहैं. जो प्रश्न पूछे तो जो चरलग्नमें चंद्रमा होय  
 और प्रश्नलग्न द्विस्वभाव होय तो वैरी आधे रस्तेसे लौटि  
 जाय घरको, और अपने घर बैठरहै. और जो द्विस्वभाव  
 लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्नभी द्विस्वभाव होय तौभी  
 आधेमार्गसे लौटिजाय घरको बैठरहै. अथवा द्विस्व-  
 भाव लग्नपर चंद्रमा होय और चरलग्न होय तौ वैरी  
 शीघ्रही आवे और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो गढको घेर  
 लेय और ग्रामको तोड लेय जीते यह फल कहिये ॥७॥

चरेशशीलग्नगतोद्विदेहः पथोर्ध्वमागत्यनि-  
 वर्ततेरिपुः ॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्या-  
 त्पराजयः स्यादशुभेक्षिते तु ॥ ८ ॥



(१८) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।

ॐ नमः

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे तासमय चरलग्नपर चंद्रमा होय और द्विस्वभावलग्न होय तो वैरी आधेमार्गसे लौटि जाय घरको. अथवा द्विस्वभाव लग्नपर चंद्रमा होय और प्रश्नलग्न चर होय तो वैरी शीघ्रहीसे आवै. और क्रूरग्रहकी दृष्टि होय तो आयके गढको तोडडारे और ग्रामको लूट लेय ॥ ८ ॥

अथ गमागमयोगप्रश्नमाह ।

अर्काकिंज्ञसितानामेकोपिचरोदयेयदा  
भवति ॥ प्रवेदेत्तदाशुगमनं वक्रगतैर्नै-  
तिवक्तव्यम् ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै उस समय सूर्य, शनैश्वर, बुध, शुक्र इन चारों ग्रहोंमेंसे कोईभी चरलग्नमें पडेहोय तो वैरी शीघ्रही आवै और जो इनमेंसे कोई वंकी होय तो न आवै यह फल इसका कहना चाहिये ॥ ९ ॥

अथान्ययोगोत्तरमाह ।

मिथगेदयेजीवज्ञनैश्वरेक्षिते गमागमौनैवव

देत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचपष्टारिपुसंगमायपा-  
पाश्वतुर्थाविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका—जो कोई प्रश्न करे वैरीके आगमनकी बात कहिये तब जो स्थिरलग्न होय और बृहस्पति और शनैश्वर देखते होंय तो वैरी नहीं आवैगा और जो कोई किसीसे लडनेको जाय और वैरीसे संग्राम करना चाहे तौ वह कभी नजाय और जो लग्नसे तीसरे पांचवें छठें स्थान पापग्रह पडे तो वैरी शीघ्र आवै और जो लग्नते चौथे स्थान पापग्रह पडे तो वैरीकी निवृत्ति होय उसके उस वैरीका नाशहोय ॥ १० ॥

अन्यच्चगमागमयोगमाह ।

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवन-  
स्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिवुकेयदातदाशीघ्र-  
मायाति ॥ ११ ॥

टीका—जो पूछे कि वैरी आवैगा कि नहीं तो प्रश्न लग्न होय तार्ते जो चतुर्थ स्थान तामें सूर्य्य -

( २० ) अ-२ पट्टपञ्चाशिका ।

बैठे होंय तो परचक्र नहीं आवैगा और जो बुध, बृहस्पति, शुक्र बैठे होंय तो वैरी शीघ्रही आवैगा यह लग्नसे चौथे स्थानकी वार्ता है ॥ ११ ॥

मेपधनुःसहवृषायद्युदयस्थाभवंतिहिबुके  
वा ॥ शत्रुनिवर्ततेवैग्रहसहितावाविद्यु-  
क्तावा ॥ १२ ॥

टीका—जो पूछै वैरी आवैगा कि नहीं तौ जो मेप-  
लग्न होय वा वृषलग्न होय वा धनलग्न होय वा सिंह-  
लग्न होय वा लग्नसे चौथे स्थानमें येही लग्न  
पडी होंय तो शत्रु ठहरे नहीं और इनमें ग्रह बैठे  
होंय या नहीं बैठे होंय, तब शत्रु नहीं सन्मुख  
ठहरै ॥ १२ ॥

अथ शत्रोरनागमनार्थयोगमाह ।

स्थिरराशौयद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितस्त-  
दाशत्रुः ॥ उदयेरविर्गुरुर्वाचरराशौस्यात्त-  
द्वागमनम् ॥ १३ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै तब जो स्थिरलग्न होय और शनि बृहस्पति तामें बैठे होंय तो वैरी अपने घर ठारहे पर चलयौ चाहे है पर चलना नहीं होय. और तो चरराशि होय और इनमें सूर्य, बृहस्पति, शनि कोईभी ग्रह होय तो वैरी ढोल निशान बजाता भया सेना सहित युद्ध करै इसका यह फल है सो कहिये ॥ १३ ॥

अथ प्रयातुर्निवृत्तिसंख्यायोगमाह ।

ग्रहःसर्वोत्तमबलो लग्नाद्यस्मिन्गृहेस्थितः ॥

मासैस्तुतुल्यसंख्याकैर्निवृत्तियातुरादिशेत्

॥ १४ ॥ चरांशस्थेग्रहेतस्मिन्कालमेवं

विनिर्दिशेत् ॥ द्विगुणंस्थिरभागस्थोत्रिगु

पंद्र्यात्मकांशके ॥ १५ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वैरी कितने दिनमें आवेगा और कितने दिनमें निवृत्त होयगा तौ प्रश्नलग्नमें जो सबल ग्रह पडे होंय और लग्नसे जितने स्थानमें पडे होंय तो उतनेही महीनेमें जितनेही दिनोंमें और जितने

घडीमें आवैगा. और जो वैरीने आयके गांव, गढ, घ  
 घेराहोय तो प्रश्नकर्ता पूछे कि, परचक्र कितने दिन  
 जायगा, तो लग्नते जितने स्थानमें ग्रह पडे होंय तित  
 महीनेमें तितनेही दिनोंमें और तितनीही घडीमें जायगा  
 और जो चरलग्न होय तो उससे दुगुने दिनमें जायगा  
 यह कहै और द्विस्वभाव लग्न होय तो इससे तिगुने  
 दिनमें जायगा ऐसा कहै ॥ १४ ॥ १५ ॥

अत्रैवमतांतरमाह ।

यातुर्विलग्नान्जामित्रभवनाधिपतेर्यदा ॥

करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंष्टुवतेऽपरे ॥ १६ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि प्रवासी कब घर आवैगा  
 अथवा परचक्र कब आवैगा तौ जो लग्नका स्वामी सा-  
 तवें स्थानमें पडाहोय तो प्रवासी अनायास आयजाय  
 अथवा वकीहोइके फिर ग्रह मार्गी होय तार्ई दिन घर  
 आय जाय और इसी प्रकार परचक्रभी आयजाय ऐ-  
 सा देखिके फल कहना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ शत्रोरागमनादिदिनप्रमाणमाह ।

उदयर्क्षाच्चंद्रक्षैभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः ।

आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् १७

इति श्रीषट्पंचाशिकायांगमागमोद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

टीका—जो पूछे कि आनेवाला वैरी कितने दिनमें आवेगा तो प्रश्नलग्नसे जिस स्थानमें चंद्रमा बैठा होय तितनेही दिनमें आवेगा यह कहिये. पर जो कोई मध्यमें ग्रह न होय तो आवैगा और जो मध्यमें ग्रह उसके साथ बैठे होंय तो न आवेगा यह कहना ॥ १७ ॥

इति श्रीषट्पंचाशिकाभाषाटीकायां गमागमा-  
ध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अथ जयपराजयावाह ।

दशमोदयसप्तमगाःसौम्यानगराधिपस्य  
विजयकराः ॥ आरार्किज्ञगुरुसिताःप्रभं-  
गदाविजयदानवमे ॥ १ ॥

( २४ ) अ०२ पट्टपञ्चाशिका ।

टीका—जो कोई प्रश्नकर्ता यह प्रश्न करे कि यह ग  
वैरीने घेरलियाहै सो टूटेगा या नहीं? तब प्रश्नलग्न  
दशवें या सातवें वा लग्न इन स्थानोंमें जो सौम्य  
ग्रह पडा होय तो गढपती जीतै. और जो नवमें स्था  
नमें मंगल शनैश्वर बैठेहोंय तो नगराधिपतिकी हार औ  
गढमें दृढ संग्राम होय और अग्नि प्रज्वलित होय औ  
बुध, गुरु, शुक्र इनमेंसे कोईभी ग्रह नवमें घरमें बैठा होय  
तो गढपतिकी विजय अर्थात् जीत कहिये ॥ १ ॥

अथनगरयायिनोविजयपरिज्ञानम् ॥

पौरास्तृतीयभवनाद्धर्माद्रायायिनः शुभैःशुभ  
दाः ॥ व्ययदशमायेपापाःपुरस्यनेष्टाःशु  
भायातुः ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि वैरीने गढ नगर घेरलियाहै  
सो टूटेगा कि नहीं ? तब प्रश्नते तीसरे लग्न विचा  
रिये और तीसरेते नवम् लग्न विचारिये. जहां लग्नमें

सौम्य ग्रह बैठे होंय तो गढपति जीते और जो नवमस्था-  
 में सूर्यलग्न सौम्य ग्रह परै तो परदल जीते गढ ग्रामका  
 मालिक हारैगा. अथवा जो ग्यारहें वा बारवें स्थान  
 क्रूरग्रह पापग्रह पडे तो ग्रामाधिपति हारे. ऐसे योगमें  
 जाय सो जीत अवि अथवा सौम्यग्रह वा क्रूरग्रह मिले  
 होंय तो पहिले युद्ध होय तो हाथी घोडा रथ प्यादे सब  
 मारे जायँ, पीछेसे जीतहोय. आप आपको हटजायँ.  
 ऐसा फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ संधिविरोधज्ञानमाह ।

नृराशिसंस्थाह्युदयेशुभाःस्युर्व्ययायसंस्था-  
 श्वयदाभवन्ति ॥ तदाशुसंधिप्रवदेन्नृपाणां  
 पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका—जो नरराशि लग्न होय ( नरराशि ) लग्न  
 रहिये मिथुन, तुला, कुंभ ये तात्काल लग्न होय और उसमें  
 शुभग्रह बैठे होय तो राजाओंकी परस्पर संधि कहिये  
 और जो पापग्रह सूर्य, भौम, शनि, क्षीण चंद्रमा द्विस्व-



( २६ ) अ-२ पदपञ्चाशिका ।

भाव राशि विपे स्थित होय तो राजाओंका परस्पर  
विग्रह होयगा. ऐसा विचार करिके कहिना ॥ ३ ॥

केन्द्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नाः प्री-  
तिम् ॥ कुर्वन्ति पापदृष्टाः पापास्तेष्वेव वि-  
परीतम् ॥ ४ ॥

टीका—केन्द्र कहिये लग्न, चौथा, सप्तम और दशमस्थान  
इन स्थानोंमें जो शुभग्रह नरराशिगत स्थित होंय और  
शुभग्रह देखते होंय और पापग्रहकी कोईभी दृष्टि नहीं  
होय तो परस्पर प्रीतिसहित संधि होजाय और जो उसी  
स्थानोंमें पापग्रह होय और दृष्टिभी होय तो उलटा  
फल जानना अर्थात् विशेष करिके वैरभाव जानो ऐसा  
इसका फल कहियै ॥ ४ ॥

अथ सेनागमनदेशस्थागमनमाह ।  
द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुकौयदातदा ॥  
आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीवानसंशयः ॥५॥  
इति पदपञ्चाशिकायांजयपराजयकथनं नाम  
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका—प्रश्नलग्नेसे दूसरे वा तीसरे स्थानविषे शुभ ग्रह गुरु, शुक्र पड़ें तो जो प्रवासी ग्राम गया हो सो शीघ्रही आवे और शत्रुकी सेनाभी शीघ्रही आवे इसमें कुछ संदेह नहीं. और फौजभी लौटिके घर आवे यह फल कहिना चाहिये ॥ ५ ॥

ति षट्पचाशिकासुबोधिनीटीकायां जयपराजयाध्यायस्तृतीयः ३ ॥

अथ शुभाशुभान्याह ।

केंद्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुपापेषुकेंद्राष्टमव-  
जितेषु ॥ सर्वार्थसिद्धिप्रवदेन्नराणांविपर्यय-  
स्थेषुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछै कि मेरा कार्य होयगा कि नहीं? तब लग्नेसे चौथे सातमें दशमें नवमें पांचमें स्थानमें जो शुभग्रह पूर्ण चंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ये बैठेहोंय नौ शुभ कहना. और केंद्रस्थानमें और रापग्रह युक्त न होय तो वा मनुष्यको सर्व

( २८ ) अ० ६ पट्टपञ्चाशिका ।

कहना. इनके विपरीत ग्रह होंय तो अशुभ कहिये. जं लग्न केंद्रमें नवमें पांचमें पापग्रह होय तो अर्थसिद्धि होय और हाथके बीचमें जो धन होय तिसका नाश होय यह फल कहना ॥ १ ॥

अथ लाभालाभमाह ।

त्रिपंचलाभास्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफ-  
लाश्चपापाः ॥ तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृ-  
राशयस्तेषुशुभंवदंति ॥ २ं ॥

टीका—जो कोई प्रश्नकर्ता पूछै कि मुझे लाभ हो कि नहीं? तब यह विचार लग्नसे तीसरे पांचमें छठे सा में जो शुभग्रह पडे होंय तो शुभ लाभफलदायक हो. और जो इन स्थानोंमें पापग्रह पडे होय तो अशुभ फल करे और जो कन्या तुला मिथुन कुंभ ये लग्न होंय और सोम नरराशि होय तो शुभफल करे है यह फल कहना ॥ २

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्या मानार्थ-  
दाःस्वसुतलग्नगताभवंति॥ पापाव्ययायस-

हितानशुभप्रदाःस्युर्लग्नेशशीनशुभदोदश-  
मेशुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—जो पृच्छक पूछे कि लाभालाभकी बात तो किसी स्थानकी वा गाँवकी वा ठाकुरकी वा मनुष्यकी, तो सौम्यग्रह दूसरे पांचमें ग्यारहवें इन स्थानोंमें पडे होय तो संपूर्ण बातकी लाभ कहिये. और ग्रामादिककीभी लाभ कहिये. राजाओंमें मान्य होय. और जो लग्नते पांचमें, दूसरे, ग्यारहमें बारहमें इन स्थानोंमें पापग्रह पडे होय तो कार्यका नाशहोय, विरोध होय, और चंद्रमा अंधेरे पक्षका क्षीण लग्नमें दशमस्थान पडे तो प्रत्यक्ष नाशको करै है. यह विचार करने योग्य है ॥ ३ ॥

इदुंद्धिसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थंपश्येद्गुरुःशु-  
भफलंसकलंकृतंस्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुत-  
नैधवगाश्चपापाः कार्यार्थनाशभयदाःशुभ-  
दाःशुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता लाभालाभकी पूछै तब

( ३० ) अ० ४ पट्टपञ्चाशिका ।

चंद्रमा दूसरे वा सातमें वा दशमें वा ग्यारहमें छठे तीसरे इन स्थानोंमें बैठा होय और बृहस्पति पूर्ण देखता होय तौ संपूर्ण लाभ कहिये. और स्त्रीकी ल कहिये. और जो तीसरे वा नवमें वा पांचमें वा आ स्थानमें पापग्रह युक्त होय तो कार्यकी सिद्धि नहीं हो और इन स्थानोंमें शुभग्रह होय तो शुभफल कहि कार्यकी सिद्धि कहिये. यह बात जानौ निश्चय का होगी ॥ ४ ॥

✓ अथ रोगार्तस्यशुभाशुभफलमाह ॥

शुभग्रहाःसौम्यनिरीक्षिताश्चविलग्नसत्ताष्टम  
पंचमस्थाः ॥ त्रिपद्दशायैचनिशाकरः  
स्याच्छुभंवदेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचिता-  
यांपट्टपंचाशिकायांचतुर्थोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

टीका—अब प्रश्नकर्ता यह पूछे कि रोगार्थ  
होगा कि नहीं ? तब प्रश्नलग्न वायायस-

एक वा पंचम इन स्थानोंमें जो शुभ ग्रह बैठा होय और  
 [भूग्रहकी दृष्टि होय और तीसरे छठे दशमें ग्यारहमें  
 इंद्रमा बैठा होय तो रोगसे निवृत्ति कहिये और जो इससे  
 बेपरीत इन्हीं स्थानोंमें पापग्रह बैठे होंय तो रोगी जीवे  
 नहीं, थोड़ेही कालमें रोगी मरे यह फल कहना ॥ ५ ॥  
 ति श्रीषट्पंचाशिकायांसुबोधिनीटीकायांशुभाशुभाध्यायश्चतुर्थः५॥

अथ प्रवासचिंतामाह ।

दूरगतस्यागमनंसुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्ल-  
 ग्नात् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिलब्धागमनंगुरुसि-  
 ताभ्याम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करे कि मेरी चीज गई है सो  
 लगेगी कि नहीं ? और जो परदेशी परदेश गया है सो  
 लगेगी कि नहीं ? तब लग्नसे दूसरे, तीसरे स्थान वा पांच-  
 दशमें शुभग्रह बैठे होंय तो परदेशी गया हुआ भी  
 टीका—भावे, और गई गई वस्तु भी प्राप्त हो

( ३२ ) पट्टपञ्चाशिका ।

और बृहस्पति शुक्र बैठे होंय तो उसी दिन घर आ जाय और नष्टवस्तु उसीदिन मिले निश्चय जानना ॥ १

अन्यदागमनमाह ।

जामित्रेत्वथवापष्टेग्रहःकेंद्रेऽथवाक्पतिः ॥

प्रोपितागमनंविद्यात्रिकोणेज्ञेसितेपिवा ॥ २

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछै आगमनकी बात तो प्रश्न लग्रसे सप्तम स्थानविपे छठे स्थानविपे, कोई ग्रह बैठ होय और केंद्रस्थानमें बृहस्पति बैठा होय तो प्रोपि सातदिनमें वा सत्ताईस दिन ताई घरमें, आजाय. नवमें, पांचमें स्थानमें बुध शुक्र बैठे होंय तो प्रवर्त शीघ्र घरमें आवै. और जो इसके विपरीत ( उलट ) हो तो विपरीत कहिये अर्थात् आगमन नहीं होगा ॥ २

अष्टमस्थेनिशानाथेकंटकैःपापवर्जितैः ॥

प्रवासीसुखमायातिसौम्यैर्लाभसमन्वितः ॥ ३

टीका—जो प्रश्नलग्नमें अष्टमस्थानविपे चंद्रमा बैठाहो केंद्रस्थानमें पाप ग्रह नहीं होय तां प्रवासी सुखपूर्व

घरमें आवे और केंद्रमें शुभग्रह पडे होंय तो प्रवासी  
 शीघ्रही आवे और दशवें स्थानमें सूर्य मंगल वा  
 शनि होय तो उसका आना नहीं होय और जो दशवें  
 स्थानमें बृहस्पति वा चंद्रमा होय तो प्रवासी मार्गमें आव-  
 तो जानिये और जो दशमें शनैश्वर होय तो प्रवासीका  
 मरण कहिये वा इन लग्नविषे तुला कन्या मिथुन धन  
 यह होय तो परदेशी सौसहित घर आवे और राजप्रसाद  
 व्यापारसे धन लाभ करिके घर आवे यही सब बात  
 निश्चय करिके जानना ॥ ३ ॥

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीये रिपु  
 केंद्रगे वा ॥ सौम्यैरदृष्टा वधबंधदाः स्युर्नष्टा  
 विनष्टा मुपिताश्च वाच्याः ॥ ४ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि परदेशी सुखीहै कि  
 दुःखीहै ? वह जीताहै कि मरगयाहै ? तब प्रश्नलग्नको देखे  
 जो पृष्ठोदय लग्न मेष, कर्क, धन, मकर, मीन इनमेंसे कोई  
 लग्न होय और पापग्रह केंद्रस्थानमें होय और शुभ-



( ३४ ) पट्टपञ्चाशिका ।

ग्रहकी दृष्टि न होय तो प्रवासीको ताडन बन्धन हुआ जानिये और पापग्रहकी पापदृष्टि होय तो प्रवासीका मरण जानिये वा क्लेशयुक्त जानिये वा मार्गमें चोरों करिके नष्ट हुआ जानिये और उसका आगमन नहीं होय ॥ ४ ॥

प्रवासिनश्चागमने कालमाह ।

ग्रहोविलग्राद्यतमेगृहेतुतेनाहताद्वादशराश-  
यःस्युः॥तावद्दिनान्यागमनस्यविद्यान्निवर्त  
नं वक्रगतैर्ग्रहैस्तु ॥ ५ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूछे कि, प्रवासी कितने दिनमें पीछे आवेगा? तब प्रश्नलग्नसे देखके जिस स्थानमें कोई ग्रह बैठा होय तितनी संख्या द्वादश गुणा करे जो अं-  
संख्या आवे उतनेही दिन पीछे प्रवासी घरमें आवे  
और जो ग्रह वक्री होय तार्द्धिन परदेशी घर आवे यह  
जल जानना ॥ ५ ॥

इति श्रीपट्टपञ्चाशिकायां सुबोधिनीटीकायां प्रवा-  
सिचिंताफलकयनेनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ नष्टवस्तुप्राप्तिमाह ।

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेपिवा ॥

स्थितंतत्रैवतद्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, मेरी वस्तु गई है मिलेगी कि नहीं, और कहाँ है ? तब वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ इन स्थिर लग्नोंमेंसे कोई होय वा इन्हीं लग्नोंका नवांश होय वा वर्गोत्तम लग्न होय तो वह वस्तु अपनेही पासके आदमीने लीनी है और वह वस्तु उसी स्थानमें स्थित है दूसरे घरमें नहीं गई है वह मिलेगी सही. यह फल विचारकर कहना. किसी चोरने नहीं ली है, घरमें है, बाहिरके आदमी ने नहीं ली है ॥ १ ॥

अथ स्थानान्तरगतद्रव्यमाह ।

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥

द्वारदेशेतथामध्येगृहांतेचवदेद्धनम् ॥ २ ॥

टीका—लग्नके द्रेष्काण तीन होते हैं—१—से १०

अंशोत्क पहिला, ११-२० अंशोत्क दूसरा,  
और २१-३० अंशोत्क तीसरा द्रेष्काण जानना.  
लग्नका पहिला द्रेष्काण प्रश्नकाल में होय तो द्वार  
के विषे चीज कहिये और दूसरे भागमें होय तो घरके  
अंतर्भागमें कहे और जो चर आदिके विषे वस्तु गई  
होय तो घरके पीछे जानिये ऐसा कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ नष्टद्रव्यादेर्लाभालाभमाह ॥

पूर्णःशशीलग्नगतःशुभोवाशीर्षोदयेसौम्य-  
निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदा-  
शुलाभोपयातोबलवाञ्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—जो कोई प्रश्नकर्ता पूछे कि, गई हुई वस्तु  
मिलेगी कि नहीं ? तब तात्कालिक लग्नमें जो शीर्षोदय  
लग्न होय और पूर्णचंद्रमा वा कोई शुभग्रह लग्नमें बैठा होय  
अथवा शुभग्रहकी दृष्टि होय तो गई हुई वस्तु शीघ्र ही  
मिलेगी और शुभग्रह बलवान् होकर, ग्यारहवाँ

३१-६  
बैठाहोय तो गई हुई द्रव्यकी लाभ होय और जो पृष्ठोदयमें पापग्रह बैठे होंय तो वस्तु पावै सही, यह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ चौरदिशामाह ।

दिग्वाच्याकेंद्रगतैरसंभवेवावदेद्विलग्रक्षात् ॥  
मध्याच्च्युतैर्विलग्रान्नवांशकैर्योजनावाच्याः ॥४॥

इति श्रीन० पृथु० विरचितायांषट्पंचाशि-  
कायांनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्ठः ॥ ६ ॥

टीका—जो कोई पूछै कि, मेरी वस्तु कौनसी दिशामें गई तब प्रश्नलग्नसे दिचार करै. जो कोई ग्रह केंद्रमें स्थित होय उसकी दिशा कहनी. जो सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, शशि बुध, और जीव ये आठों दिशाओंके स्वामी हैं जो सूर्य केंद्रमें होय तो पूर्वदिशामें कहिये और जो शुक्र बैठाहोय तो अग्रिकोणमें कहिये. और जो मंगल केंद्रमें होय तो दक्षिणदिशामें कहिये और राहु

होय तो नैर्ऋत्यदिशामें कहिये शनि होय तो पश्चिममें  
 कहिये. चंद्रमासे वायव्य कहिये. बुध होय तो उत्तर  
 और बृहस्पतिसे ईशान कहिये. और जो दो ग्रह केंद्रमें  
 होंय तो जिसका अधिक बल होय उसकी दिशा कहिनी  
 और जो केंद्रमें कोईभी ग्रह न होय तो प्रश्नलग्नसे दिशा  
 कहनी. मेष सिंह धन लग्नसे पूर्व, वृष कन्या मकरसे  
 दक्षिण, मिथुन तुला कुम्भसे पश्चिम, कर्क वृश्चिक  
 मीनसे उत्तर दिशा कहनी चाहिये. फिर लग्नका नवमांश  
 देखके कोस योजनका प्रमाण कहना तहाँ प्रथम नवमांश  
 के पंचमांशतक गिनना और पंचमसे नवम तांई गिनना  
 जो अंश गणनामें आवे अर्थात् जितने अंश गतहोंय तितने  
 योजन वह वस्तु गई जानिये ऐसा फल जानना ॥ ४ ॥

इति श्रीषट्पञ्चाशिकासुबोधिनीटीकायां

नष्टवस्तुमाप्तिःषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

## अथ मिश्रकाध्यायः ।

तत्रगुर्विण्याः पुत्रदुहित्रोर्जन्म वरस्य च पुनः  
कन्यालाभालाभफलमाह ।

विषमस्थितेर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांगना-  
याश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतोन्य  
थावामम् ॥ १ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न पूछे कि मेरी स्त्रीके गर्भ हैउसे या भैंस या गौ या घोड़ीके क्या होगा? कहौ. तहां प्रश्न-लग्नसे विचारे, जो शनैश्वर विषमस्थानमें अर्थात् तीसरे पांचमें सातमें नौमें लग्नमें या ग्यारहवेंस्थानमें बैठाहोय तो पुत्रकाजन्म कहिये और द्वितीय आदिछः स्थानोंमें अर्थात् दूसरे चौथे आठवें दसवें बारहवें इन स्थानोंमें जो शनैश्वर बैठाहोय तो कन्याका जन्म कहिये और जो प्रश्नकर्ता स्त्रीकी पूछे तो स्त्रीकी प्राप्ति इन्हीं स्थानोंसे कहिये जो प्रश्नलग्नमें शनैश्वर समस्थानोंमें होय

( ४० ) - पट्टपञ्चाशिका ।

। उसे स्त्रीकी प्राप्ति होय और जो विषमस्थानमें बैठा होय तो स्त्रीकी प्राप्ति नहीं यह फल जानना चाहिये ॥ १ ॥ -

अथ विवाहज्ञानमाह ।

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशा  
लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणकेंद्रे  
पुवासौम्याः ॥ २ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता विवाहका प्रश्न करै कि विवाह होयगा कि नहीं? तहां प्रश्नसे तीसरे पांचमें छठे सातमें ग्यारहवें स्थानमें चंद्रमा बैठाहोय और सूर्य, बुध, गुरु इनकी दृष्टि होय तो विवाह अवश्य करिके होय और जो पांचमें, नवमें और केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह बैठे होंय तोभी किसी प्रकारसे विवाह अवश्य होयगा और चंद्रमा यथोक्तस्थानमें न होय तो विवाह नहीं होगा यह फल कहिना चाहिये ॥ २ ॥

अथ वृष्टिज्ञानमाह ।

चंद्रार्कयोःसप्तमगौसितार्कासुखेष्टमेवापित  
थाविलग्नत् । द्वितीयदुश्चिक्व्यगतौतथाचव  
र्षासुवृष्टिप्रवदेन्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि वर्षा होयगी कि नहीं तब प्रश्नलग्नमें सूर्य चंद्रमा स्थित होय और चंद्रमासे सातवें स्थानमें शुक्र शनिभी यथासंभव स्थित होय तो वर्षा होय वा सूर्यसे दूसरे, चौथे, अष्टमस्थानमें शुक्र शनिश्वर स्थित होय तौभी वर्षा होय और जो चंद्रमाके स्थानमें शुभग्रह बैठहोय तौभी वर्षा कहिये. यह फल वर्षाक कहना योग्य है ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसिः  
तेपक्षे ॥ चंद्रेवाप्युदयगते जलराशिस्थे  
वदेद्वर्षम् ॥ ४ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, मेघ वर्षगा या नहीं तब प्रश्न



लग्नविषे शुभ ग्रह जलराशि—कर्क, मकर, कुम्भ, मीन, वृश्चिकविषे स्थितहोंय और सौम्यग्रह केंद्रस्थान विषे स्थितहोंय अथवा दूसरे तीसरे होंय तो शीघ्रही जल वर्षे वा शुक्लपक्षमें चंद्रमा जलराशिमें स्थित होकर लग्नमें बैठाहोय वा सप्तमस्थानमें होय तो निश्चय करिके वर्षा होय. यह फल जानिये ॥ ४ ॥

अथ गर्भिण्यागर्भकिंभविष्यतितत्राह ।

पुंवर्गे लग्नगते पुंग्रहदृष्टे बलान्विते पुरुषः ॥

युग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेस्त्रीबुधयुक्तेतु गर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—प्रश्नकर्ता गर्भिणी गौ है स्त्री पूँछे कि, उसके कुछ होगा कि नहीं और क्या होगा. तब लग्नविषे जो पुरुष लग्न मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ, ये होंय तो और पुरुष ग्रह सूर्य, मंगल, गुरुकी दृष्ट होय और बलवान् होय तो पुरुष जानिये और जो स्त्रीलग्न अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन ये समलग्न

३१-०

होंय और स्त्रीग्रह चंद्रमा शुक्र देखता होय तो स्त्री वा कन्याका जन्म जानिये और जो लग्नमें बुधकी दृष्टि होय तो सगर्भा कहिये और पंचम स्थानमें क्रूर ग्रहकी दृष्टि होय तो गर्भ नहीं होय ऐसा फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रष्टुःस्त्रीपुंविषयेप्रश्नमाह ।

कुमारिकांवालशशी बुधश्चवृद्धांशनिःसूर्य  
गुरुप्रसूतांम् ॥ स्त्रीं कर्कशांभौमसितौ-  
विधत्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ६ ॥

टीका—जो कोई पूछे कि, स्त्री कैसी है तहाँ लग्नमें चंद्रमाको देखना जो चंद्रमा शुक्रपक्षकी द्वितीयासे लेके दशमी पर्यंतका होय तो कुमारी कन्या होय और दशमीसे लेके कृष्णपक्षकी पंचमी पर्यंत होय तो यौवनवती कहिये और पंचमीसे अमावास्यातार्दिका होय तो वृद्धस्त्री कहिये और लग्न विषे बुध होय तो अथवा दूबता होय तो भी यौवनसहित कन्या कहिये

और याही क्रमसे वृद्धस्त्री और वही क्रमसे विचारिये जो लग्नविषे शनैश्वर स्थितहोय अथवा बलवान् दृष्टिहोय तो स्त्री वृद्ध जानिये सूर्य और बृहस्पतियुक्त दृष्टि होय तो स्त्रीको प्रसूति सहित जानिये और मंगल शुक्र होय तो कर्कशा और तरुण स्त्री कहिये इसीप्रकार पुरुषोंकाभी क्रमजानना चाहिये ॥ ६ ॥

मनसिकाचिंतावर्ततेएतदाह ।

आत्मसमं लग्नगतैर्भ्रातासहजस्थितैःसुतः  
सुतगैः ॥ माता वा भगिनी वा चतुर्थगैःशत्रु-  
गैःशत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेध-  
मांश्रितोगुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिभिन्नशत्रु-  
पुत्रैवप्राच्यंबलयुतेषु ॥ ८ ॥

टीका—जो प्रथमलग्नमें सूर्यादिक ग्रह बलसहित लग्न-  
विषे स्थित होय तो अपने समान कोई कोई पुरुष  
चित्तमें जानिये और जो तृतीय-र ग्रह बलिष्ठ

होय तो भ्रातृप्रश्न कहिये और चौथे स्थान विषे ग्रह बली होय तो माताभगिनी दासीकी चिंता कहिये और जो पंचम स्थान विषे ग्रह बलिष्ठ हों तो पुत्र कन्याकी चिंता कहिये और जो ग्रह षष्ठस्थान विषे बली होयके बैठे होय तो शत्रुकी चिंता कहिये और जो सप्तमस्थानमें ग्रह बली होय तो भार्याकी चिंता कहिये और नदम स्थान विषे ग्रह बली होय तो धर्मकी चिंता कहिये और जो दशम स्थान विषे ग्रह बली होय तो गुरु पिताकी चिंता जानिये जो लग्नका नवमांश कर्का अधिपति मूर्तिस्थान विषे स्थित होय तो अपने शरीरकी चिंता कहिये यह मित्रभाव देखकर बलाबल कहना जो शुभग्रहकी दृष्टियुक्ति होय तो शुभफल कहना और शत्रु पापग्रह दृष्टियुक्ति होय तो अशुभ फल कहना ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथप्रवासचिंताज्ञानमाह ।  
चरलग्नेचरभागेमध्याद्भ्रष्टेप्रवासचिंतास्या

त् ॥ भ्रष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिन  
वक्री ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूँछे तब चर अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर, इनमेंसे कोई लग्न होय अथवा इनका नवमांश होय तो मध्यम स्थानमें कहो और पंच-मांशसे च्युति कहो और छठे आदि नवमां-श होय तो यहाँ प्रश्नकर्ताको प्रवासचिंता कहिये और जो सप्तमस्थानका नवमांश होय तो कोई ग्रहकी दृष्टि होय तो प्रवासीकी ( अनेक प्रकारसे आगमनकी ) चिंताकरता जानना परंतु वह ग्रह वक्री न होय और जो वह वक्री होय तो स्थितहुवाभी प्रदेश अवश्य जायगा यह फल कहना ॥ ९ ॥

अथ प्रष्टाचेत्पृच्छतिकीदृश्यास्त्रियासहमे

संयोगआसीदित्येतत्परिज्ञानमाह ।

अस्तेरविसितवक्रैःपरजायांस्वांगुरौबुधेवे-  
श्याम् ॥ चंद्रेचवयःशशिवत्प्रवदेत्सौरै-  
न्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टाका—जो प्रश्नकर्ता प्रश्न करै कि कैसे स्त्रीके साथ मेरा सग हुआथा, तो ऐसा कहे; लग्नसे मंगल, शुक्र, सप्तमस्थान विषे स्थितहोयँ तो परस्त्रीसंयोग कहना और जो बृहस्पति सप्तमस्थानमें होय तो अपनी स्त्रीका संयोग कहना और बुध सप्तम होय तो वेश्याका संगम जानना । वैसेही चंद्रमासे स्त्रीकी उमर कहना नवमस्थानमें चंद्रमा होय तो बालक कहना और जो तरुण होय तो तरुण कहना और जो वृद्ध होय तो वृद्ध कहना ये सब बातें चंद्रमाका बल देखके जैसी चंद्रमाकी अवस्था होय तैसी अवस्था पीछे कहनी चाहिये. यही फल कहने योग्यहै और शनैश्वरसे निरुष्ट जाति कहना ॥ १० ॥

अथ रोगार्तस्यपरदेशेस्थितस्यमृत्यु-  
योगमाह ।

मंदः पापसमेतोलग्नान्नवमेशु भैरयुतदृष्टः ॥  
रोगार्तःपरदेशेचाष्टमगोमृत्युकरएव ॥ ११ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूँछे कि, मेरा मनुष्य परदेश गया है वह बीमार है सो जीवै है या नहीं ? तब प्रश्नसमयमें जो शनैश्वर और पाप ग्रह नवमस्थान विषे स्थित हों और शुभग्रहकी दृष्टियुक्त न होय तो परदेशमें वह मनुष्य रोगसे बहुत पीडित कहना और जो शनैश्वर पापग्रह सहित वा शुभग्रहसहित अष्टमस्थानमें स्थित होय तो रोगीकी मृत्यु कहना वह मनुष्य कदाचित् नहीं जीवेगा ऐसा फल कहना ॥ ११ ॥

अथ प्रश्नेपितान्यदेशस्थः कथं तिष्ठति तदाह ।

सौम्ययुतोर्कः सौम्यैः संदृष्टश्चाष्टमर्क्षसं-  
स्थश्च ॥ तस्माद्देशादन्यंगतः सवाच्यः पि-  
ता तस्य ॥ १२ ॥

टीका—जो प्रश्नकर्ता पूँछे कि, मेरा पिता परदेश गया है सो वह उसी देशमें है या और किसी देशमें गया है ? तब जो प्रश्नलग्नमें वा अष्टमस्थानमें सूर्य सौम्य ग्रह करके

युक्त होय या शुभग्रहकी दृष्टि होय तो या जटमलग्न होये तो उस देशसे और देशमें गया जानिये और सूर्य इसके विपरीत होय तो उसी देशमें कहना ऐसा फल कहना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ द्रव्यतस्करस्वरूपकालदिग्देशानां ज्ञानमाहा

अंशकाज्ज्ञायतेद्रव्यं द्रेष्काणैस्तस्कराः स्मृ-  
ताः ॥ राशिभ्यः कालदिग्देशावयो ज्ञाति-  
श्वलग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यपुत्रपृथुयशोविर  
चितापट्टपञ्चाशिकासमाप्ता ।

टीका—प्रश्नसमयमें जो लग्न होय तिसके, नममांश-  
कसे तो द्रव्य कहनी और धातु मूल जीव जो पीछे कहि  
आयेहें तिससे राशिकी तुल्य वर्ण कहना जैसे सूक्ष्म जात  
कर्म कहाहें कि, मेपराशिका लालवर्ण, वृषका श्वेत,



मिथुनका हरित, कर्कका पाटल, सिंहका पांडुर, कन्याका चित्र विचित्र, तुलाका श्याम, वृश्चिकका भूरा, धनका पीला, मकरका कर्पूरी, कुंभका बभ्रुक, मीनका मलिनवर्ण जानिये और लग्नके नवमांशकसे दीर्घ ह्रस्व मध्यम यह भाव जानना चाहिये. तहां कुम्भ, मीन, मेष, वृष, ह्रस्व नाम छोटा जानिये और मिथुन, कर्क, धन, मकर इनके नवमांशसे मध्यम भाव जानिये, याने न छोटा न बड़ा, सम जानिये. और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिकके नवमांशसे दीर्घ भाव कहिये ऊँचा और जो अंशाधिपति बलसहित होय तो पुष्टदीर्घ कहिये अस्तगत होय तो क्षीण छोटी वस्तु जानिये और लग्न क द्रेष्काण विषे होय तो चौर जानिये जैसी द्रेष्काणकी आकृति होय तैसी चौरकी भी जानिये तहाँ विशेष इतना है कि, मेषके प्रथम द्रेष्काणविषे परशुहस्त पुरुष कृष्णवर्ण लालनेत्र विकरालरूप कहिये. द्वितीय द्रेष्काणसे लालवर्ण स्थूलोदर दीर्घमुख टेढ़े पाँव क-

हिये मेषके तृतीयद्रेष्काणमें क्रूर पुरुष कापिलवर्ण र-  
 कांबर दंडधारी कहिये. वृषके प्रथम द्रेष्काणमें स्त्री तनु  
 दीन कुंचितकेश स्थूलोदरी जलावस्त्र पहिरे, द्वितीयमें  
 पुरुष काला सहि लांगल शकटमणि कुशल, तृतीयमें बडे  
 पाँच पुरुष कहिये. मिथुनके प्रथमके द्रेष्काणमें स्त्री स-  
 हितही निपटही रजस्वला गृहिने सहित होय, दूसरे पु-  
 रुष वनमें स्थित कवचधारी धनुषपाणी जानिये, तीसरे  
 पुरुष रत्नभूषित पंडित धनुष हाथमें कहिये, कर्कके प्र-  
 थममें पुरुष हाथी समान शरीर शूकरमुख, दूसरे यौवन  
 वती युवा पुरुष वनमें रहिबेवारो सुवर्णभूषण सहित  
 पुरुष जानिये. सिंहके प्रथम द्रेष्काणमें पत्नीसंस्कार  
 गृहजंत्रुक वराह कुक्कुर कहिये. द्वितीयमें पुरुष धनु कु-  
 टिल केश दंड हस्तमें जानिये. कन्या स्त्री प्रथममें मली-  
 नवस्त्र द्वितीये पुरुष लेखनी हस्तमें अतिरोग धनुषपा-  
 णी तृतीय उन्नत गंड जंचे कंधे रेशमीवस्त्र पाटांबर

तुला प्रथममें तुला हस्तमें पुरुष वीथ्यापण मत्त उन्नत  
हस्त भांड चिंतनकरे क्षुधार्त आतुरवेग होय कलश-  
बडा मुख होय गृध्रमुख होय तृतीय पुरुष दग्धमुखादि  
दृष्टि धनुषपाणि. वृश्चिक प्रथम स्त्री लग्न स्थान-  
च्युत सर्प वृश्चिक पाद मनोहरणी द्वितीये स्त्री भर्तृकृते  
भुजंगावर्त्तशरीर मुखकी वांछित तृतीये पुरुष चिप-  
डामुख होय अथ धनु प्रथम धनुषपाणी द्वितीये गौरवर्ण  
पुरुष तृतीये दंडहाथ जानिये. मकर प्रथमे रोम-  
स्थूल दाँत बडे द्वितीये स्त्री शमामावर्ण गहिने सहित  
तृतीये पुरुष श्याम वर्णजानिये. कृम्भ प्रथमे पुरुष  
गृध्र तुल्य मुख कमलसहित द्वितीये पुरुष गौरवर्ण  
तृतीये पुरुष श्यामवर्ण कहिये. मीन प्रथमे पुरुष  
नौका स्थित द्वितीये गौरवर्ण पुरुष तृतीये द्रेष्काणे  
पुरुष लग्ने भीतिसहित समर्याद भ्रष्टांग जानिये. अथ  
' कालदिग्देशा ' इति । मेष, वृष, मिथुन, कर्क,

मकर, धन लग्न होयँ तो रात्रि समय जानिये. वृष, कन्या मकर विषे दक्षिणदिशा कहिये. मिथुन, तुला, कुम्भसे पश्चिम; कर्क, वृश्चिक, मीनसे उत्तर और प्रश्नकालमें मेषलग्न होय तो मेषका प्रचार भूमिका कहिये. वृषमें गोकुलादिस्थान, मिथुनमें गीत नृत्यादि स्थानमें अथवा एकांतके स्थानमें कहिये, कर्कमें नालासमीपमें, सिंहलग्नमें वनकी भूमिमें, कन्या विषे नौका वा क्रीडास्थानमें, तुलाविषे ग्रामभूमिमें, मकर विषे अपनेही स्थानमें, वृश्चिकमें ग्राममें वनस्थानमें, धनुविषे कुंभमें नदीके निकटमें शिल्पगृहमे भांडके समीप स्थान कहिये तहां प्रश्नकालके लग्नसे चौरकी अवस्थाका प्रमाण कहना और जो चंद्रमा लग्नका स्वामी होय तो बालक कहिये और मंगल होय तो ब्रह्मचारी वारहवर्षका जानिये और शुक्र होय तो यौवनसहित षोडशवर्षकी अवस्था कहिये और बृहस्पति लग्नाधिपति होय

तो तीसवर्षका वय कहिये सूर्य होय तो वृद्ध पचास-  
वर्षके ऊपर जानिये और सत्तरवर्षसे अधिककामी  
जानिये ( अथ स्वामिनां लग्नज्ञानमाह ) तहां शुक्र  
बृहस्पति लग्नाधिपति होंय तो ब्राह्मण जानिये और  
सूर्य मंगल होंय तो क्षत्रिय जानिये और चंद्रमा होय  
तो वैश्य जानिये और बुध होय तो शूद्र जानिये  
और शनैश्वर होय तो वर्णसंकर जाति जानिये. हीन  
वर्णभी जानिये यह सब बातें अपनी बुद्धिके बलसे  
विचार करना योग्य है ॥ १३ ॥

इति श्रीवराहमिहिराचार्यात्मजपृथुयशोविरचितायां पट्टपञ्चा-  
शिकायां रामकृष्णशर्मकृतायां सुबोधिनीटीकायां,  
मिश्रकाव्याय-सप्तमःसमाप्तः ॥ ७ ॥

विश्वं येन तत्र चराचरमिदं सर्वार्थदं सर्वगं ।  
यं ध्यायन्ति सदाजना हृदिमृदा स्वाभाटसिद्धये विभुम्  
वन्दे तं करुणानिधिं स्वगिरमा श्रीरामकृष्णं प्रभुं ।

प्रारंभे निजनिर्मितिप्रसृतये श्रीरामकृष्णो द्विजः ॥ १ ॥

चैनाचन्द्रोऽर्गलपूरे न्यवसद्ब्राह्मणोत्तमः ॥

तस्यात्मजो रामलालो रामकृष्णस्तदात्मजः ॥ २ ॥

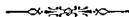
पट्टपञ्चाशिकाग्रंथस्य टीका भावार्थबोधिनी ॥

अबोधानां सुबोधाय नृगिरा रचिता मया ॥ ३ ॥

॥ इति पट्टपञ्चाशिका संपूर्णा ॥



# विक्रय्यपुस्तकोंकी-सूची ।



| नाम.   | का० रु० आ० |
|--|------------|
| लीलावती सान्वय भापाटीका अत्युत्तम ...  | १-८        |
| बृहज्जातकसटीक भट्टोत्पलीटीकासमेतंजिल्द                                       | १-१२       |
| बृहज्जातकमहीधरकृतभापाटीका अत्युत्तम  | १-८        |
| वर्षदीपकपत्रीमार्ग ( वर्षजन्मपत्र बनानेका )                                  | ०-४        |
| मुहूर्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफू. १ ग्लेज                                    | १-८        |
| मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका ...   | २-८        |
| तान्त्रिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत<br>भा०टीका अत्युत्तम टैपकी छपी ... | १-८        |
| ज्योतिषसार भापाटीकासहित ...  | १-०        |
| संपूर्ण पुस्तकोंका बड़ा मृचीपत्र)॥ का टिकट भेजकर मँगालें                     |            |

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना-

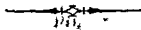
खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीविद्मणेश्वर” छापाखाना, खेतवाडी-बंबई

श्रीः

# अथ षट्पञ्चाशिका ।

संस्कृतटीकासहिता ।



श्लोक—केशाजार्कनिशाकरान्क्षितिजविज्जीवास्फु-  
जित्सूर्यज्ञान्विघ्नेशंस्वगुरुंप्रणम्यशिरसादेवींचवागीश्वरी  
म् ॥ प्रभञ्जानवतोवराहमिहिरापत्यस्यमद्वस्तुनोलोका-  
नांहितकाम्यथाद्विजवरष्टीकांकरोत्युत्पलः ॥ १ ॥

प्रणिपत्यरविमूर्धावराहमिहिरात्मजेनपृथु-  
यशसा ॥ प्रश्रेकृतार्थगहनापरार्थमुद्दिश्य-  
सद्यशसा ॥ १ ॥

टीका—कानीहशास्त्रेसंबंधाभिधेयप्रयोजनानिभवंती-  
त्युच्यते आब्रह्मादिविनिश्चितमिदवेदांगमितिसंबंधः ल-  
ग्रहोरात्रेष्काणनवांशसप्तांशकादिनाग्रहसंस्थानदर्शनेनच-  
जयपराजयलाभालाभहतनष्टादिपरिज्ञानमभिधेयम्



न्यत्रशुभाशुभकथनादिहलोकपरलोकसिद्धिरितिप्रयोज-  
 नम् ॥ किमेभिरुक्तैरित्युच्यते सर्वस्यैवहिशास्त्रस्यकर्म  
 णोवापिकस्यचित् ॥ यावत्प्रयोजनंनोक्तंतावत्केननगृ-  
 ह्यते ॥ कस्यास्मिन्शास्त्रेऽधिकारः उच्यते द्विजस्यैव  
 यतस्तेनपडंगोवेदोऽध्येतव्योज्ञातव्यश्च कान्यंगानी-  
 त्युच्यते शिक्षाकल्पोव्याकरणंनिरुक्तंज्योतिषांगतिः॥  
 छंदसांलक्षणंचैवपडंगोवेद उच्यते इति सतामयमाचारो-  
 यच्छास्त्रस्यारंभेऽप्यभिमतदेवतानमस्कारंकुर्वंतितदयमपि  
 आवंतिकाचार्योद्विजोवराहमिहिरात्मजःपृथुयशाः सं-  
 क्षिप्तांप्रश्नविद्यांस्वसूत्रैः कर्तुकामः आदावेवभगवतः  
 श्रीसूर्यस्यनमस्कारंस्वनामारण्यापनंचप्राह प्रणिपत्येति  
 वराहमिहिराख्यस्याचार्यस्यआत्मजेनपुत्रेणपृथुयशसा  
 पृथुयशाइत्यभिधानं यस्य तेन रविंसूर्यं मूर्धाशिरसा प्र-  
 णिपत्यनमस्कृत्यप्रश्नेप्रश्नविषये इयंप्रश्नविद्यारुतारचिता  
 कीदृशीअर्थगहना अर्थोभिधेयंगहनोगुह्यो यस्याः  
 साअर्थगहना किमर्थम् परार्थमुद्दिश्य परेषांलोकानामर्थः  
 परार्थमुद्दिश्याभिधाय कीदृशेनपृथुयशसा

सद्यशसा सत्शोभनंयशःकीर्तिर्यस्य तथाभूतेनविद्याशौ-  
र्यादिगुणयुक्तेनेत्यर्थः ॥ १ ॥

च्युतिर्विलग्राद्धिबुकाच्चवृद्धिर्मध्यात्प्रवासो-  
ऽस्तमयान्निवृत्तिः ॥ वाच्यग्रहैःप्रश्नविलग्न-  
कालाद्ग्रहंप्रविष्टोहिबुकेप्रवासी ॥ २ ॥

टीका—अधुनालग्नचतुर्थसप्तमदशमानांचतुर्णांस्था-  
नानांविचारप्रविभागमाह च्युतिर्विलग्रेति च्युतिःच्यवनं  
स्थानपरिभ्रंशः विलग्रात्तात्कालिकात्पृच्छालग्रात्च्युति  
र्ज्ञेया पृच्छांपृच्छति अमुकस्थानान्मेच्युतिर्भविष्यतिवा  
नेत्येतत् विलग्रात्ज्ञेयम् एवंहिबुकाच्चतुर्थस्थानात्ग्रहसु  
हृत्सुखानांवृद्धिर्ज्ञेया मध्यंदशमस्थानंतस्मात्प्रवासोज्ञेयः  
प्रवसनंप्रवासःअन्यदेशगमनम् अस्तमयात्सप्तमस्थाना-  
न्निवृत्तिःप्रवासान्निवर्तनम् कथमेवमुच्यते चरस्थिरद्वि-  
स्वभावात्मकत्वेन यतउक्तम् प्रश्नविलग्नकालात् प्रश्नःपृ-  
च्छा प्रश्नेविलग्नंप्रश्नविलग्नंतस्यकालःसमयस्तस्मात् तेन  
चरराशौलग्नगतेस्वामिनायुतेदृष्टेवाशुभग्रहाणामन्यतमे-

नवायुतेदृष्टे परिशिष्टग्रहसंयोगसंदर्शनरहितेच्युतिर्भवति  
 अन्यथानभवत्येव यतउक्तम् वाच्यंग्रहैःकारणभूतैः  
 वाच्यं वक्तव्यं सर्वमेवैतत् एवंस्थिरराशौपापग्रहदर्शनयोगर  
 हितेपिनभवत्येव यतोवक्ष्यति वृषसिंहवृश्चिकघटैर्वि-  
 द्धिस्थानंगमागमौनस्तइति तथाद्विस्वभावेभवतिनवा  
 स्वामिशुभग्रहदर्शनाधिक्यात्पापानामल्पत्वाच्चभवति अ-  
 न्यथानभवत्येव एवंचतुर्थस्थानस्यसामान्यतयैवशुभग्र-  
 हस्वामिदर्शनयोगाद्गृहादीनांवृद्धिः अन्यथाऽपचयः अ-  
 थोप्रवासः दशमस्थानस्यचरराश्यात्वकत्वात् पाप-  
 ग्रहदर्शनात्प्रवासः अन्यथास्वामिशुभग्रहदर्शनयोगा-  
 च्चनप्रवासः सप्तमस्थानस्यचरराश्यात्मकत्वात् पापग्र-  
 हदर्शान्नाप्रवासान्निवृत्तिः अन्यथास्वामिसौम्यगृहदर्श-  
 नयोगाच्चनिवृत्तिः गृहंप्रविष्टोहिब्रुकेप्रवासी हिब्रुकेचतुर्थ-  
 स्थानेप्रवासीविदेशस्थोनरोगृहंवेश्मप्रविष्टोनवेतिवक्तव्यं  
 चतुर्थस्थानेस्वस्वामिदृष्टेयुक्तेवागृहंप्रविष्टोऽन्यथानप्रवि-  
 ष्टइति हिब्रुकेग्रहेप्रविष्टेगृहंप्रविष्टंप्रवासिनंविद्धि हिब्रुका-

स्तमयांतरगेप्रहेचपथिवर्ततेपुरुषइति तस्यप्रविष्टस्य  
यावंतिदिनानिव्यतीतानितावंत्येवगृहंप्रविष्टस्यप्रवासिनो  
गतानि अथवायावद्भिर्दिनैःसग्रहश्वतुर्थस्थानेयास्यति  
तावद्भिरेवप्रवासीगृहंप्रविश्यति एतद्दूरगतस्यगमनंचेत्  
यस्मिन्वक्ष्यमाणेयातेसतिवक्तव्यम् नान्यथेति एतच्च  
पुरस्ताद्विस्तरेणाभिधीयतइति ॥ २ ॥

योयोभावःस्वामिदृष्टोद्युतोवासौम्यैर्वास्या-  
त्तस्यतस्यास्तिवृद्धिः ॥ पापैरेवंतस्यभा-  
वस्यहानिर्निर्देष्टव्यापृच्छतांजन्मतोवा ॥३

टीका—अधुनातन्वादीनांद्वादशभावानांशुभाशुभज्ञान-  
माह योयोभावइति तनुधनसहजसुहृत्सुतारिपुजायामृत्यु-  
धर्मकर्मायव्ययाइतिद्वादशभावाउक्ताः कुजशुक्रज्ञेद्व-  
र्कज्ञशुक्रकुजजीवसौरियमगुरवः इतिराश्यधिपाउक्ताः  
तथा क्षीणेद्वर्कयमाराःपापास्तैःसंयुतःसौम्यइतिग्रहाणां  
पापसौम्यत्वमुक्तम् तथा दशमतृतीयेनवपंचमे चतुर्था-  
ष्टमेकलत्रंचपश्यंतिपादवृद्ध्याफलानिचैवंप्रयच्छंति ।

( ८ ) पट्टपञ्चाशिका ।

मेतद्दृष्टिफलमुक्तं तेन पृच्छासमयेयः कश्चिद्भावस्तन्वा-  
दिकः स्वामिनात्मीयनाथेन दृष्टोऽवलोकितस्तस्य भावस्य  
वृद्धिरुपचयोस्ति विद्यते अथवा तेनैव स्वामिनायुतः  
संयुक्तस्तस्यापि वृद्धिरस्ति सौम्यैर्वास्यात् सौम्यग्रहाणां  
बुधगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणामन्यतमेन वायुतो दृष्टो वा भावः  
स्याद्भवेत् तस्यापि वृद्धिरस्ति वर्द्धनं वक्तव्यम् पापैरेवमिति  
एवमनेन प्रकारेण पापैः पापग्रहैरपि रविकूरयुतबुधभौम-  
सौरिक्षीणचंद्राणामन्यतमेन यो यो भावो युक्तो दृष्टो वा तस्य  
भावस्य हानिरुपचयो निर्देष्टव्यावक्तव्या कस्मादिति  
ते देवाह पृच्छतां जन्मतो वेति पृच्छतां पृच्छासमयेन रा-  
णां जन्मतो वा जायमानानां तथा चोक्तं जातके  
पुष्पंति शुभाभावांस्तन्वादीन् न्नान्ति संस्थिताः । पापाः  
सौम्याः पठेरिन्नाः सर्वेनेष्टाव्ययाष्टमगाः इति जन्मन्याधा-  
नकाले प्रश्नकाले वेति ॥ ३ ॥

सौम्ये विलग्रेयदिवास्यवर्गेशीर्षोदये सिद्धि-  
मुपैतिकार्यम् ॥ अतो विपर्यस्तमसिद्धिहे-

तुःकृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रम् ॥ ४ ॥

टीका—अधुनाप्रश्नसमयेलाभादाशुभाशुभज्ञानमाह सौ-  
म्यइति सौम्यानांशुभानांग्रहाणांशुभगुरुशुक्रपूर्णचंद्राणाम-  
न्यतमेविलग्नस्थितेयदिवास्यसौम्यग्रहस्यवर्गेतत्कालंविल-  
ग्नप्राप्तेगृहहोराद्रेष्काणनवमभागद्वादशांशकस्त्रिंशःवर्गःप्र-  
त्येतव्योग्रहस्ययोयस्यविनिर्दिष्टइतिवर्गलक्षणमुक्तम् अ-  
थशीर्षोदयेपृच्छा लग्नमेपाद्याश्वत्वारःसधन्विमकराःक्षपा  
बलाज्ञेयाः पृष्ठोदयाविमिथुनाशिरसान्येद्युभयतोमीनः इ-  
तिराशिपृष्ठोदयत्वंशीर्षोदयत्वंचोक्तम् एतेपामन्यतमेयदि  
विलग्नपृच्छतोभवतितत्कार्यंसिद्धिसाध्यतामुपैतिगच्छति  
अतोविपर्यस्तमिति अतोऽस्मात्पूर्वाक्काद्विपर्यस्तंविपरीत  
मस्ति असिद्धिहेतुरसाध्यतायाःकारणम् एतदुक्तंभवति  
पापग्रहेणविलग्नस्थेनपापवर्गेवाविलग्नगतेपृष्ठोदयेवालग्नग-  
तेप्रष्टुःकार्यंनसिद्धयति कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरंविमिश्रं तत्पू-  
र्वाक्तंविमिश्रितंसंकीर्णयदिभवेत्तदाप्रष्टुःकृच्छ्रेणक्लेशेनसं-  
सिद्धिकरंकार्यसाधकंभवति एतदुक्तंभवति पापसौम्यौ-

द्वावपिलग्रस्थौ भवतः पापसौम्यौ वर्गस्थौ वा उभयोदयो  
 मीनो वाशीर्षोदयः पापयुक्तः पाववर्गस्थो वा पृष्ठोदयः सौम्य-  
 युक्तः सौम्यवर्गस्थो वा उभयोदयो वा तदा क्लेशेन सिद्धिरुद्भवति  
 तत्र च वलाधिक्यान्निश्चय इति ॥ ४ ॥

होरास्थितः पूर्णतनुः शशाङ्कोर्जावेन दृष्टो य  
 दिवासितेन ॥ क्षिप्रं प्रनष्टस्य करोति लब्धि  
 लाभोपयातो वलवाञ्छुभश्च ॥ ५ ॥

टीका—अधुनानष्टलाभज्ञानमाह होरास्थित इति श-  
 शाङ्कश्चन्द्रः पूर्णतनुः परिपूर्णमंडलः दशमीमारभ्यरूप्यप-  
 च्चमीयावत् पूर्णतनुर्भवति तथा च यवनेश्वरः मासे च शुक्र-  
 प्रतिपत्प्रवृत्तेः पूर्णः शशी मध्यबलो दशाहे भिष्टो द्वितीये ल्पब-  
 लस्तृतीये सौम्यस्तु दृष्टो बलवान् सदैव ॥ एवं पूर्णतनुः शशां-  
 कः होरायां लग्ने स्थितः होरेति लग्नं भवनस्य चाहंमिति लग्न-  
 स्य होराव्यपदेशः तत्रस्थः शशीर्जावेन गुरुणा दृष्टोऽवलोकितो  
 यदिवामितेन शुभेण दृष्टो भवति यदि वेत्ययं निशानो वि-  
 ष्णुः क्षिप्रमाश्वेषनष्टस्यापहनस्य द्रव्यादेर्लब्धि लाभं क-

रोति लाभोपयातइति अथवा शुभेःसौम्यग्रहःबलवान्  
वीर्ययुतोलाभेएकादशस्थानेउपयातःप्राप्तोभवति तथापि  
चशब्दात्क्षिप्रमेवनष्टस्यलब्धिकरोतीति ग्रहाणांस्थान-  
दिक्चेष्टाकालबलंजातकेप्रोक्तम् बलवान्मित्रस्वगृहो-  
च्चैरित्यारभ्यस्वदिनादिष्वशुभशुभाइत्येतदंतम् ॥ ५ ॥

स्वांशेविलग्रेयदिवात्रिकोणेस्वांशेस्थितःप  
श्यतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरोति  
जीवंमूलंपरांशोपगतःपरांशम् ॥ ६ ॥

टीका—अधुनाहृतनष्टमुष्टिगतचिंतितानां धातुमूल-  
जीवानांपरिज्ञानमाह स्वांशेति यःकश्चिद्ग्रहस्तत्कालंस्वां-  
शेआत्मीयनवांशकेस्थितःविलग्रेप्रभ्रलग्रेतत्कालोदितंस्वां-  
शंतस्यैवग्रहस्यात्मीयिनवांशकं तच्चपश्यत्यवलोकयति-  
तदाप्रष्टुःधातुचिंतांवदेत् सुवर्णादिमृत्तिकांतंधातुद्रव्यम्  
एतदुक्तंभवति स्वांशकस्थोग्रहःस्वांशकयुक्तंलग्नंपश्यति  
तदाधातुचिंतांप्रवेदेत् अथवालग्नगतंस्वांशंनपश्यतितदात्रि



स्वांशंपश्यति नवमस्थानं पंचमस्थानं वा स्वांशकसमेतं पश्य-  
तीत्यर्थः यतो लग्नपंचमनवमानामेक एवांशस्तुल्यकालमु-  
देति एतदुक्तं भवति स्वनवांशकस्थो ग्रहो लग्नपंचमनवमा-  
ना मन्यतमं स्वांशकयुक्तं पश्यति तदा धातुचिंतां वदेत् तत्रा-  
पि धाम्याधाम्यप्रविभागो ग्रहांशकवशाद्वाच्यः पापग्रहां-  
शकमवस्थितस्य ध्राम्यम् सौम्यग्रहांशकसमवस्थितस्या-  
धाम्यमिति परांशकस्थस्तु करोति जीवमिति यः कश्चि-  
द्ब्रह्मः परनवांशकस्थोऽन्यग्रहनवभागावस्थितो विलग्नगतं  
स्वांशंपश्यति त्रिकोणयोरन्यतमगतं वा तदा जीवचिन्तां-  
वदेत् पुरुपादिसरीसृपांतो जीवः तत्रादिग्रहयुक्तनवांशक-  
वशात् द्विपदसरीसृपादिविभागः मिथूनकन्यातुलाधनुः-  
पूर्वार्धकुंजादेवानराः पक्षिणश्च द्विपदा ज्ञेयाः मेपवृषमिहध-  
न्विपराधाश्चतुष्पदाः कर्कवृश्चिकमकर्मीनाः सरीसृपाः  
तत्र मीनोत्पदः अन्ये तु बहुपदाः मृत्परंशोपगतः परां-  
शमिति यः कश्चिद्ब्रह्मः परंशोपगतोऽन्यग्रहनवांशकम-  
वस्थितो विलग्नगतं परनवांशकं त्रिकोणयोरन्यतमगतं

बापश्यतितदामूलं करोति मूलचिंतां प्रवेदेत् एतद्यतः प्रायः  
 संभवति तद्ग्रहदर्शनाज्ज्ञेयम् वृक्षादितृणांतंमूलं तत्रापि ग्रह  
 युक्तनवांशकवशात्स्थलजलत्वंज्ञेयं कर्कमकरमीनाः जल-  
 जाः अन्येतु सर्वे स्थलजा इति तथाच चिंतासिद्धिप्रश्नज्ञान  
 मुक्तं स्वांशोस्थितो विलग्नप्रदाग्रहः स्वांशकं निरीक्षेत धातो-  
 स्तदानुचिंतां करोति परसंस्थितो जीवंपरभागसन्निविष्टः  
 परांशकं प्राग्विलग्नमायातम् पश्यति मूलं प्रवेदे देवं वपं-  
 चमेज्ञेयम् ॥ ६ ॥

धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विंध्यादेत-  
 देवप्रतीपम् ॥ लग्ने योऽंशस्तत्क्रमाद्गण्य एव  
 संक्षेपोऽयं विस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ ७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां  
 पट्टपंचाशिकायां होराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

टीका—एतदेव पुनरपि प्रकारान्तरेणाह धातुमिति मेप-  
 मिथुनसिंहतुलाधनुः कुंभाः ओजराशयः वृषकर्ककन्यावृ-  
 श्चिकमकरमीनायुग्मराशयः

प्रथमनवांशकोदयेधातुं प्रवदेत् द्वितीये मूलं तृतीये जीवं पु-  
 नरपि चतुर्थे धातुं पंचमे मूलं षष्ठे जीवं पुनः सप्तमे धातुम् अष्ट-  
 मे मूलं नवमे जीवमिति युग्मे विंश्यादेतदेव प्रतीपम् युग्मे यु-  
 ग्मराशौ लग्नगतेन वांशकक्रमेणैतदेव पूर्वोक्तं प्रतीपं विपर्य-  
 येण विंश्यात् जानीयात् तेन प्रथमनवांशकोदये जीवं द्वि-  
 तीये मूलं तृतीये धातुं पुनश्चतुर्थे जीवं पंचमे मूलं षष्ठे-  
 धातुं पुनः सप्तमे जीवम् अष्टमे मूलं नवमे धातुमिति एवमने-  
 नं प्रकारेण क्रमात्परिपाठ्यालभे विलभे यो शोयो नवभाग-  
 स्तत्कालमुदितः स यावद्गणयोगनयिः अत्र चलग्रनवां-  
 शकवशात्प्राग्बयोनिविभागः केचित्द्रेष्काणत्रितये-  
 यथासंख्यं धातुं मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विंश्यादेतदेव प्र-  
 तीपमिति वर्णयन्ति तच्चायुक्तम् यस्मात्पुरस्तादाचार्य-  
 एव वक्ष्यति अंशकाज्जायतेद्रव्यमिति अयं संक्षेपः समा-  
 स उक्तः विस्तरात् व्यासेनास्यैवार्थस्य प्रभेदः स्पष्टता अ-  
 भिधीयत इति ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्भट्टोत्पलविरचितायां पट्टपञ्चाशिकायां  
 होराविवृतौ संक्षेपाद्धोराध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

वृषसिंहवृश्चिकघटैर्विद्धिस्थानंगमागमौन-  
स्तः॥नमृतंनचापिनष्टंनरोगशांतिर्नचाभि-  
भवः ॥ १ ॥ तद्विपरीतंतुचरैर्विद्विशरीरैर्मि-  
श्रितंफलंभवति ॥ लग्नैर्द्वोर्वक्तव्यंशुभद-  
ष्ट्याशोभनमतोऽन्यत् ॥ २ ॥

टीका—अथातोगमागमाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावे-  
वस्थानगमागमजीवितमरणरोगशांतिपराभिभवज्ञानमाह  
वृषसिंहेति वृषसिंहवृश्चिकाःप्रसिद्धाः घटःकुंभःएतेस्थिर-  
राशयः एतैर्वृषसिंहवृश्चिकघटैः एतेषामन्यतमेलग्नंप्राप्ते-  
स्थानंविद्धि जानीहि प्रष्टुःस्थानलाभोभवति गमागमौन-  
स्तः गमश्वागमश्वागमागमौतौनस्तः नभवतः नमृतंमरणं-  
नभवतिजीवत्येव नचापिनष्टं धात्वादिद्रव्यंधनम् अदर्शन-  
पथिस्थितंनष्टंननाशंप्राप्तम् अथवाविदेशस्थोनरस्तस्मा-  
त्स्थानान्नष्टःअन्यदेशंगतः नरोगशांतिःरोगोज्वरादिः  
तस्यशांतिःशमनंव्याध्यभिभूतस्यनभवति नचाभिभवः  
अभिभवःपराजयः सशत्रोःसकाशान्नभवति ॥

तद्विपरीतंतुचरैरिति चराःमेपकर्कटतुलामकराः तदित्यनेनानंतरोक्तं विद्धिस्थानमित्यादिकंसर्वप्रत्यवमृश्यते चरैःचराभिधानैःपृच्छालग्नस्थैस्तत्फलमनंतरोक्तंविपरीतं विपर्ययाद्भवति पूर्वमुक्तंविद्धिस्थानमिति तत्रचरैःस्थानप्राप्तिर्नास्तीतिवाच्यागमागमौनस्तइतिपूर्वमुक्तं चरैर्गमागमोविद्येते पूर्वमुक्तंनमृतः चरैर्मृतइतिवक्तव्यं पूर्वमुक्तंनचापिनष्टं चरैर्नष्टमितिवाच्यं पूर्वमुक्तंनरोगशांतिः चरैःरोगशांतिर्भवतीतिवाच्यं पूर्वमुक्तंनचाभिभवः चरैरभिभवोभवतीतिवक्तव्यम् द्विशरीरैर्मिश्रितंफलंभवति इति द्विशरीराः द्विस्वभावाः मिथुनकन्याधन्विनीनाः तैःपृच्छालग्नमिश्रितंफलंभवति यत्स्थिरैरुक्तंयच्चरैरुक्तं तन्मिश्रितमुभयंफलंभवति भवतिनभवतीतिवासर्वमेतद्यथोद्दिष्टम् तत्रायंनिश्चयः द्विस्वभावलग्नेप्रथमेद्धैस्थिरवत्फलंसर्ववदेत् द्वितीयेद्धैचरवत् यतस्तस्यप्रथमाद्धैस्थिरसमीपवर्तिद्वितीयंचरसमीपवर्तीति तथाचास्मदीये प्रश्नज्ञाने स्थिरराशौलग्नगतेस्थानप्राप्तिवदेन्नचागमनम्

रोगोपशमोनाशोद्रव्याणांस्यात्पराभवोनात्र चरराशौ-  
 विपरीतंमिश्रंवाच्यंद्विमूर्त्युदये स्थिरवत्प्रथमेर्द्धस्यादपरे  
 चरराशिवत्सर्वमितिलग्नैर्द्वोर्वक्तव्यमिति लग्नंप्रश्नलग्नम्  
 इंदुश्वंद्रस्तयोर्लग्नैर्द्वोर्द्वयोरपि शुभदृष्ट्यासौम्यग्रहदर्शनेन-  
 शोभनंफलंवक्तव्यम् देहमतोरूपत्वात् लग्नैर्दूसौम्यदृष्टौ  
 संपत्करौभवतः अतोऽन्यदिति अतोऽस्मादुक्ताद्विपरीतेन्य-  
 दशुभंवक्तव्यं तेनलग्नैर्दूपापदृष्टौयदिभवतस्तदासर्वपृच्छा  
 स्वशोभनंफलंवक्तव्यम् अर्थादेकैकस्मिन्नुभयदृष्टेमध्ये-  
 मंफलंभवति ॥ २ ॥

सुतशत्रुगतैःपापैःशत्रुमार्गान्निवर्तते ॥

चतुर्थगैरपिप्राप्तःशत्रुर्भग्नोनिवर्तते ॥ ३ ॥

टीका-अधुनाशत्रोर्मार्गनिवृत्तिज्ञानमाह सुतशत्रुगतै-  
 रिति सुतश्चशत्रुश्चसुतशत्रू अनयोर्गतैःसुतस्थानंपंचमं रि-  
 पुस्थानंपष्ठम् अनयोर्द्वयोरपिस्थानयोःएकस्मिन्वापापैः  
 सूर्यभौमशानिभिःप्रश्नलग्नाद्गतैःसमवस्थितैःप्रष्टुः शत्रुःरि-  
 पर्मार्गात्पथःनिवर्ततेगच्छति तेरेवपापै-

समवस्थितैः अपिशब्दःसम्भावनायां प्राप्तोपिशत्रुर्निकट  
स्थोभग्नःपराजितोनिवर्ततेप्रतीपंगच्छतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

ज्ञपालिकुंभकर्कटारसातलेयदास्थिताः ॥

रिपोःपराजयस्तदाचतुष्पदैःपलायनम् ॥ ४ ॥

चरोदयेशुभःस्थितःशुभं करोतियायिनाम् ॥

अशोभनैरशोभनंस्थिरोदयेपिवाशुभम् ॥५ ॥

टीका—अथान्ययोगांतरमाह ज्ञपेति ज्ञपोमीनःअ-

लिर्वृश्चिकःकुंभकर्कटौप्रसिद्धौ एतेरसातलेलग्राच्चतुर्थस्था-  
नेस्थिताएतेपामन्यतमः प्रथमलग्राच्चतुर्थस्थानेयदासमव-  
स्थितोभवतितदारिपोःशत्रोःपराजयोऽभिभवोभवति च-  
तुष्पदैःपलायनमिति मेपवृषसिंहधन्विपरार्धाश्चतुष्पदाः  
एतेपामन्यतमेलग्राच्चतुर्थस्थेशत्रोःपलायनमपसर्पणंभवती  
त्यर्थः ॥ ४ ॥ अथयायिनांप्रतिशुभाशुभमाह चरोदय इति  
चरोदयेचरराशुद्रमेतस्मिंश्चशुभग्रहाणांबुधजीवशुक्राणां  
अन्यतमःस्थितश्चेत् यायिनांगच्छतांशुभंश्रेयःकरोति  
विदधाति तस्मिन्नेवचरोदयेअशोभनैःस्थितैःपापग्रहाणां

रविभौमार्कजानामन्यतमेस्थितेतेषामेवयायिनामशोभन-  
मश्रेयःकरोति स्थिरोदयेपिवाशुभम् स्थिराणामन्यत-  
मस्योदयेपापसंयुक्ते विकल्पेनशुभंभवति तत्स्थानंपापग्र-  
हस्यस्वक्षेत्रम् उच्चमूलत्रिकोणंमित्रक्षेत्रंवाभवति तदाशुभ-  
मन्यथानशुभमित्यर्थः केचित्स्थिरेऽष्टमेऽपिवाशुभमिति  
पठन्ति स्थिरराशौलग्नाष्टपापसंयुक्तेवाशुभंप्राग्वदिति ॥ ५ ॥

स्थिरेशशीचरोदयेनचागमोरिपोर्यदा ॥

तदागमंरिपोर्वदेद्विपर्ययेविपर्ययम् ॥ ६ ॥

स्थिरेतुलग्नमागतेद्विरात्मकेतुचन्द्रमाः ॥

निवर्ततेरिपुस्तदासुदूरमागतोऽपिसन् ॥ ७ ॥

चरेशशीलग्नगतोद्विदेहःपथोर्धमागत्यनिव-

र्ततेरिपुः ॥ विपर्ययेचागमनंद्विधास्यात्परा

जयःस्यादशुभेक्षितेतु ॥ ८ ॥

टीका—अथ शत्रोर्गमागमज्ञानमाह स्थिरेशशीति  
स्थिरेस्थिरराशौशशीचन्द्रोभवति चरोदयेचरराशौलग्न-  
तेप्रभलग्नेप्रभकालेयदारिपोःशत्रोर्नचागमः ॥



विद्यतेतदातस्मिन्नेवप्रश्नोरिपोरागममागमनंबदेद्ब्रूयात् वि  
 पर्ययेविपर्ययमिति अस्मादेवपूर्वोक्ताद्विपर्ययेअन्यथात्वे  
 पर्ययंविपरीतमेववक्तव्यं एतदुक्तंभवति चरेशशिनिस्थि  
 रराशौ लग्नगतेयदिरिपोरागमनंश्रूयते तदातस्मिन्प्रश्नेना  
 गच्छतीतिवदेत् ॥ ६ ॥ अथशत्रुनिवृत्तिज्ञानमाह स्थिरे  
 त्विति स्थिरराशौलग्नमागते तत्काललग्नप्राप्तेद्विरात्मके  
 द्विस्वभावे राशौयदाचन्द्रमाःशशीभवति तदारिपुःशत्रुः  
 सुदूरमागतोऽपिसन्स्वस्थानात्सुतरांदूरमागतोऽपिनिव  
 र्त्ततेप्रतीपंगच्छतीति अपिशब्दःसम्भावनायाम् ॥ ७ ॥ अ  
 थान्ययोगान्तरमाह चरेशशीति चरेचरराशौशशी  
 चंद्रमाभवति तथालग्नगतःप्रागलग्नस्थोद्विदेहोद्वि स्वभावो  
 राशिर्यदातस्मिन्कालेपथोमार्गस्यार्धमागत्यनिवर्त्ततेप्रती  
 पंगच्छति तुशब्दोऽवधारणे विपर्ययइति विपरीतेशत्रोराग  
 मनंद्विप्रकारेणस्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति द्विस्वभावरशि  
 स्थेशशिनि चरराशौलग्नगतेशत्रोरागमनंबलवन्नभवेत्  
 पराजयःस्यादशुभेक्षितेत्विति तस्मिन्नेव विपरीतेयोगे

विपरीतेचंद्रलग्नेवाशुभेक्षितेपापग्रहसंहृष्टेशत्रोःसकाशात्प्र  
 द्युःपराजयोऽभिभवः स्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति द्विस्व-  
 भावराशिस्थितेशशिनि चरराशौलग्नगतेद्वयोरपिपापह-  
 ष्ट्याशत्रोरागमनंद्विधाभवति समागमश्चपराजयंकरोती-  
 त्यर्थः ॥ ८ ॥

अर्काकिंज्ञसितानामेकोपिचरोदयेयदाभव  
 ति ॥ प्रवेदत्तदाशुगमनंवक्रगतैर्नेतिवक्त-  
 व्यम् ॥ ९ ॥ स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेक्षिते  
 गमागमौनैववदेत्तुपृच्छतः ॥ त्रिपंचपष्टा  
 रिपुसंगमायपापाश्चतुर्थाविनिवर्तनाय ॥ १० ॥

टीका—अन्यदपिगमागमावाह अर्केति अर्कःआ-  
 दित्यःआर्किःसौरिःज्ञःबुधःसितःशुक्रःएषामध्येएकोऽपि-  
 ग्रहोयदाचरोदयेचरराशौलग्नगतेस्थितोभवतितदाआशु-  
 क्षिप्रमेवयियासोर्गमनंवदेद्ब्रूयात् राविवर्ज्यमन्येषामेकत-  
 मोपियदाचरराशौलग्नगतोभवतिसचवक्रगतैःप्रतीपगतिमा-  
 श्रितोभवति तदायियासोर्गमनंनेतिवक्तव्यम् याताः

च्छतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ अथयोगांतरमाह स्थिरोदयइति  
 स्थिरराशौ लग्नगतेयस्मिंश्चजीवशनैश्वरेक्षितेबृहस्पतिसौ-  
 रिभ्यांहृष्टेपृच्छतःप्रष्टुः गमागमौनैववदेत् ब्रूयात् शत्रुग-  
 मागमौनैवभवतइत्यर्थः तस्मिन्नेवजीवशनैश्वरेक्षिते पापाः  
 पापग्रहाः त्रिपंचपष्ठास्तृतीयपंचमपष्ठस्थानस्थाभवंति त-  
 दारिपोःशत्रोःसंगमायभवंति प्रष्टुःशत्रुणासहसंयोगोभव-  
 तीत्यर्थः अस्मिन्नेवपूर्वोक्तयोगे पापाअशुभग्रहाः चतुर्था-  
 श्वतुर्थस्थानस्थास्तस्यैवशत्रोर्विनिवर्तनाय प्रतीपगमना-  
 यभवंति शत्रुर्विनिवर्ततइत्यर्थः ॥ १० ॥

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवन-  
 स्थौ ॥ बुधगुरुशुक्राहिवुकेयदातदाशीघ्र  
 मायाति ॥ ११ ॥ मेपधनुःसिंहवृषायद्युद-  
 यस्थाभवंतिहिवुकेवा ॥ शत्रुर्निवर्ततितदा  
 ग्रहसहितावावियुक्तावा ॥ १२ ॥

टीका—अथान्यद्रमनागमनाययोगांतरमाह नागच्छ-  
 तीति अर्कःआदित्यः चंद्रःशशी तीलप्रायदाचतुर्थभवन-

स्थौचतुर्थस्थानगतौ भवतः तदापरचक्रं नागच्छति नाया-  
ति शत्रुसमूहो नायातीत्यर्थः बुधगुरुशुक्राः हिवुके चतुर्थ  
स्थाने यदा स्थिता भवन्ति तदापरचक्रं शीघ्रमाशु आयाती-  
त्यर्थः ॥ ११ ॥ अथयोगान्तरमाह मेघधनुरिति एषामे-  
पधनुः सिंहवृषाणां मध्ये यद्येकतम उदयस्थस्तत्काललग्न-  
तो भवति वा इत्यथवा तात्कालिकात् प्रश्नलग्नाद्दिवुके  
चतुर्थस्थाने एषामध्यादन्यतमो भवति ते च ग्रहैः सहिताः  
समेताः रहिता वा तदा तस्मिन्नेव कालेश्च निर्भवते प्रतीपंग-  
च्छतीत्यर्थः ॥ १२ ॥

स्थिरराशौ यद्युदये शनिर्गुरुर्वा स्थितस्तदा-  
शत्रुः ॥ उदये रविर्गुरुर्वा चरराशौ स्यात्त-  
दागमनम् ॥ १३ ॥ ग्रहः सर्वोत्तमवलोल-  
गाद्यस्मिन् ग्रहे स्थितः ॥ मासैस्तत्तुल्यसं-  
ख्याकैर्निवृत्तियातुरादिशेत् ॥ १४ ॥  
चरांशस्थे ग्रहे तस्मिन्कालमेवं विनिर्दिशेत् ।

टीका—अन्यच्छत्रोरनागमनप्रकारमाह स्थिरराशा-  
 विति उदयेतत्काललग्नेस्थिरराशौतत्रैवशनिःसौरिःगुरुः  
 जीवोवाभवति तदाशत्रुःरिपुःस्वस्थानाच्चलितः तत्रैव  
 तिष्ठति अथवाचरराशौलग्नगतेतत्रच रविर्गुरुर्वाभवति  
 तदाशत्रोरगमनं आगमःस्याद्भवेत् ॥ १३ ॥ अथ  
 यातुर्निवृत्तिज्ञानार्थयोगंश्लोकद्वयेनाह ग्रहेति सर्वोत्तम-  
 बलोग्रहःलग्नाद्यस्मिन्ग्रहेयावत्तमेस्थानेस्थितः सर्वपामुत्त-  
 मबलःप्रधानबलोपेतःतत्तुल्यसंख्याकैस्तत्तुल्यातत्समासं-  
 ख्याप्रमाणंयेपांमासानांतैः यातुःजिगमिपोःनिवृत्तिनि-  
 वर्त्तनंप्रवासान्निर्दिशेद्भवेत् ॥ १४ ॥ चरांशस्थइति  
 तस्मिन्सर्वोत्तमबलेग्रहेचरांशस्थेचरराशिनवजागस्थेपू-  
 र्वाक्तकालमेवंविनिर्दिशेत् तत्तुल्यसंख्याकैर्मासैःस्थिर-  
 भागांशकस्थेस्थिरनवांशस्थेतमेवकालंद्विगुणंद्वयात्मकां-  
 शकेद्विस्वभावनवांशकेतमेवकालंत्रिगुणंवदेत् ॥ १५ ॥  
 यातुर्विलग्नान्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ॥  
 करोतिवक्रमावृत्तेःकालंतंश्रुवतेपरे ॥ १६ ॥

उदयर्क्षाच्चंद्रक्षंभवतिचयावद्दिनानितावद्भिः ॥  
 आगमनंस्याच्छत्रोर्यादिमध्येनग्रहःकश्चित् १७  
 इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचिता-  
 यांषट्पंचाशिकायांगमागमाध्या-  
 योद्धितीयः ॥ २ ॥

टीका—अत्रैवमतांतरमाह यातुरिति विलग्नपृच्छालग्न-  
 तस्माज्जामित्रभवनंसप्तमस्थानंतस्याधिपतिः स्वामीसय-  
 दायस्मिन्कालेवक्रंविपरीतंगमनंकरोतितंकालंयातुर्जिग-  
 मिषोरावृत्तेरावर्तनस्यप्रवासान्निवृत्तिःभवति अपरेआ-  
 चार्याःकृष्णादयोवृत्तेकथयन्ति वक्रंचग्रहाणांयथासंभवं  
 योज्यम् तथाचयानुःपृच्छालग्नान्तसप्तमभवनाधिपोयदाव-  
 क्रोभवति तदावक्तव्यः प्रवासनिवृत्तयेकालः ॥ १६ ॥  
 अथशत्रोरागमनेदिनप्रमाणमाह उदयेति उदयर्क्षमुदय-  
 लग्नं चंद्रक्षंचंद्रराशिःपृच्छाकालेयत्रचंद्रमाःस्थितस्तस्मा  
 दुदयर्क्षाच्चंद्रक्षंयावत्संस्यंभवति तावत्संख्यैर्दिनैःशत्रो-  
 रागमनंस्यात् यदिमध्यइति त

यदिकश्चिद्ब्रह्मो न भवति तदैवं ग्रहसंभवेशात्तुरवश्यमेव नयातीत्यर्थः ॥ १७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां पट्टपञ्चाशिका-  
विवृतौ गमागमाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

दशमोदयसप्तमगाः सौम्यानगराधिपस्य वि-  
जयकराः ॥ आर्किज्ञगुरुसिताः प्रभंगदा-  
विजयदानवमे ॥ १ ॥ पौरास्तृतीयभवना  
द्धर्माद्वायायिनः शुभैः शुभदाः ॥ व्ययदश-  
माये पापाः पुरस्यनेष्टाः शुभायातुः ॥ २ ॥

टीका—अथ जयपराजयाध्यायो व्याख्यायते तत्रा-  
दावेव जयपराजयज्ञानमाह दशमोदयेति उदये लग्ने  
दशमसप्तमे प्रसिद्धे एते पुस्थाने पुलघ्नात्सौम्याः शुभग्रहाः  
गताः समवस्थिताः पृच्छालग्ननगराधिपस्य पुरस्वामि-  
नो राज्ञो विजयकराः विशेषेण जयंकुर्वन्ति आरोहो-  
मः आर्किः सौरिः एतौ प्रश्नलघ्नात् नवमेस्थाने स्थि-  
तौ प्रष्टुः प्रभंगदौ प्रकर्षेण भंगं पलायनं ददतः तथा ज्ञो बुधः

गुरुःजीवः सितःशुकः एतेलग्नान्नवमेस्थाने स्थिताः  
विजयदाःविशेषेणजयदाभवन्ति प्रष्टुःसंग्रामेविजयो भ-  
वतीत्यर्थः ॥ १ ॥ अथ नगरयायिनः कस्यवि-  
जयोभवतीत्येतत्परिज्ञानमाह पौरास्तृतीयेति पुरेभवाः  
पौराःनागराःपृच्छालग्नान्तृतीयभवनप्रभृतियद्राशिपङ्कम-  
ष्टमस्थानंयावत् तावन्नगराज्ञेयाः एतद्राशिपङ्कंपौरा-  
णांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः धर्माद्यायानिनः धर्मान्नवम  
स्थानात्प्रभृतिराशिपङ्कंद्वितीयंस्थानंयावत् तावत्स्थि-  
ताज्ञेयाः एतद्राशिपङ्कंयायिनांशुभाशुभत्वेज्ञेयमित्यर्थः  
येनादौयात्रायामुद्योगःकृतःसयार्यायेनपश्चात्कृतः सनाग-  
रःवाशब्दोऽत्रचार्येज्ञेयः शुभैःशुभदाः एतेयथाविभागक-  
ल्पिताराशयोयस्यशुभैः सौम्यग्रहैः संयुक्ताभवन्ति तस्य  
शुभदाभवन्तीत्यर्थः अर्थायस्यपापैः संयुक्तास्तस्य  
पराजयदाः तथाचप्रश्नेधर्माद्यैश्चक्रदलेर्यायिनोनागरास्तृ-  
तीयादौविजयः सौम्ययुतेस्यात्पुरभागेऋरसंयुतेभंगः त-  
थाचास्मदीयेप्रश्नज्ञानेनवमायेचक्रदलेविज्ञेयोयायि ।



तीयादौ पौराः शुभसंदक्षाभागे विजयः पुरेभंगइति अर्था-  
 देवभागद्वयेपि पापसौम्यैर्युक्तेव्यामिश्रंफलंभवति नजयो  
 नपराजयइति व्ययदशमायेपापाइति व्ययंद्वादशंदशमंप्र-  
 सिद्धम् आयमेकादशंसमाहारेएकवद्भावः तत्रपापाः पा-  
 पग्रहाः पृच्छालघात्समवस्थिताभवंतितदापुरस्यनगरस्य  
 नेष्टाः नशुभाभवंति यातुर्यत्पुरंतस्यनशुभाः यातुः पुनः  
 शुभकराः उपचयकराइत्यर्थः ॥ २ ॥

नृराशिसंस्थाह्युदयेशुभाःस्युर्व्ययायसंस्था  
 श्रयदाभवंति ॥ तदाशुसंधिप्रवदेन्नृपाणां  
 पापैर्द्विदेहोपगतैर्विरोधम् ॥ ३ ॥

टीका—अथसंधिविरोधज्ञानार्थयोगांतरमाह नृरा-  
 शीति नृराशयःपुरुपराशयः पुरुपाळतयोराशयः नृरा-  
 शयःमिथुनकुंभतुलाकन्याः तथाआचार्यएवज्ञापकः तु-  
 लाथकन्यामिथुनोघटश्चनृराशयइति शुभाःसौम्यग्रहाःबु-  
 धशुक्रबृहस्पतयः एतेउदयेपृच्छालग्रेस्थिताः स्युर्भवेयुः  
 थवातएवसौम्यग्रहाः नृराशिसंस्थाव्ययायसंस्था-

श्वभवंति व्ययंद्वादशम् आयमेकादशं चशब्दःसमुच्चये  
 अनयोरपिसंस्थाःसमवस्थितायदाभवन्ति तदाआशुक्षिप्र-  
 मेवनृपाणांसंधिसंधानंप्रवदेद्व्यात् पापैरिति पापारवित्तौ  
 मशानिक्षीणचंद्राः द्विदेहाःद्विस्वभावराराशयः पापैरशुभग्र-  
 हेद्विदेहोपगतैर्द्विस्वभावराराशिपुसमवस्थितैर्नृणामेवंविरोधं  
 विग्रहंप्रवदेत् ॥ ३ ॥

केंद्रोपगताःसौम्याःसौम्यैर्दृष्टानृलग्नगाःप्री-  
 तिम् ॥ कुर्वन्तिपापदृष्टाःपापास्तेष्वेवविप-  
 रीतम् ॥४॥द्वितीयेवातृतीयेवागुरुशुक्रौय-  
 दातदा ॥ आश्वेवागच्छतेसेनाप्रवासीचन-  
 संशयः ॥ ५ ॥

इति वराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचि-  
 तायांपट्टपंचाशिकायांजयपराजयो नाम  
 तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

टीका—योगांतरमाह केंद्रोपगताइति केंद्राणिलग्न-  
 तुर्थसप्तमदशमानि तेषूपगताः समवस्थिताः

शुभग्रहेः अथवातएवसौम्याःनृलग्नगाःनृराशिपुप्रागुक्ते-  
 पुस्थिताःसौम्यैःशुभग्रहैश्वदृष्टाःपरस्परमवलोकयंतीत्यर्थः  
 एवंविधाप्रीतिसंधिकुर्वन्तिनिवृत्तिप्रापयन्ति तेपुकेन्द्रेषुसम-  
 वस्थिताःपापाःतेचपापदृष्टाःपरस्परंपापैरवलोकिताःविप-  
 रीतंविपर्ययमप्रीतिविग्रहंकुर्वन्ति ॥ ४ ॥ अथ सेना-  
 गमनज्ञानमाह द्वितीयेति प्रश्नलगाद्यदाद्वितीयेवायथा-  
 तथागुरुशुक्रौजीवसितौभवतः तदाचमूः सेनाआश्वेवाग-  
 च्छतिक्षिप्रमेवायाति प्रवासीअन्यदेशस्थः आश्वेवाग-  
 च्छतिनसंशयः निर्विकल्पंयथास्यात्तथा ग्रहाणांक्रमवि-  
 वक्षार्थम् कदाचिद्वावेवद्वितीयेवाद्वावेवतृतीयेवाएकोद्वि-  
 तीयेवातृतीयेऽप्येकएवेति ॥ ५ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्टपञ्चाशिकाविवृतौजय-  
 पराजयाऽध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

केन्द्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुपापेषुकेन्द्राष्टमव-  
 र्जितेषु ॥ सर्वार्थसिद्धिंप्रवदेन्नराणांविपर्यय-  
 स्थेषुविपर्ययःस्यात् ॥ १ ॥ त्रिपंचलाभा

स्तमयेषुसौम्यालाभप्रदानेष्टफलाश्वपापाः ॥  
 तुलाथकन्यामिथुनंघटश्चनृराशयस्तेषुशु-  
 भंवंदन्ति ॥ २ ॥

टीका—अधुनाशुभाशुभलक्षणाध्यायोव्याख्यायते  
 तत्रादावेवप्रष्टुः शुभाशुभज्ञानमाह केंद्रेति केंद्राणि लग्न १  
 चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशमानि १ ० त्रिकोणसंज्ञेनवपंचमे शुभाः  
 सौम्यग्रहाः केंद्रेषुत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुशुभाः स्थिताये-  
 पुसौम्यग्रहयुक्तेष्वित्यर्थः शुभान्वितेष्वितिपाठः तथापा-  
 पेपुपापग्रहेषुकेंद्राष्टमस्थानंवर्जयित्वा अन्यत्रसमवस्थिते-  
 पुसत्सुनराणांमनुष्याणांसर्वार्थसिद्धिं वदेत् सर्वपांनिःशे-  
 पाणामर्थानांसिद्धिं साधनं वदेद्भूयात् विपर्ययइति एषुपा-  
 पसौम्येषुविपर्ययेविपरीते अन्यथास्थितेषु विपर्ययोवैप-  
 रीत्यमेवस्याद्भवेत् एतदुक्तंभवति यदापापाःकेंद्रत्रिको-  
 णाष्टमेपुज्जवंति सौम्याःकेंद्रत्रिकोणाष्टमवर्ज्यमन्यत्रज-  
 वन्ति तदासर्वार्थानामसिद्धिंप्रवदेत् ॥ १ ॥ अधुनालाजाला-  
 भज्ञानमाह त्रिपंचेति तृतीयपंचमेस्थानेप्रसिद्धेलाजएका-

दशम अस्तमयंसप्तमं एतेषु सौम्याः शुभग्रहाः प्रष्टुर्लाभ-  
प्रदाः एष्वेवत्रिपंचलाभास्तमयेषु पापाअशुभग्रहाः नेष्ट-  
फला अनिष्टमशोभनंफलंकुर्वन्ति अर्थनाशं समारभन्ती-  
त्यर्थः तुलेति तुलाकन्यामिथुनाःप्रसिद्धाः घटःकुंभः  
एतेनरराशयःपुंराशयः एतेषुलग्रेषुसौम्यग्रहाधिष्ठितेषुशु-  
भंभद्रंमुनयोवदन्ति कथयन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥

स्थानप्रदादशमसप्तमगाश्चसौम्यामानार्थ-  
दाःस्वसुतलग्नगताभवन्ति ॥ पापाव्यया  
यसहितानशुभप्रदाःस्युर्लग्नेशशीनशुभदो  
दशमेशुभश्च ॥ ३ ॥ इंदुद्विसप्तदशमा-  
यरिपुत्रिसंस्थंपश्येद्गुरुःशुभफलंप्रमदाकृतं  
स्यात् ॥ लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्चपापाः  
कार्यार्थनाशभयदाःशुभदाःशुभाश्च ॥ ४ ॥

टीका—अन्ययोगांतरमाह स्थानप्रदाइति सौम्याः  
शुभग्रहाः लग्नादशमेसप्तमेचस्थानेगताःसमवस्थिताःप्रष्टुः

तेषुस्थिताः सौम्याःमानार्थदाःस्युर्भवेयुः पापाव्ययेति  
पापाअशुभग्रहाः व्ययोद्वादशम् आयएकादशं तयोर्द्वयोः  
सहिताः नशुभप्रदाःस्युःभवेयुः नशुभफलंप्रयच्छंति लग्नइ-  
ति पापाइत्यनुवर्तते शशीचंद्रः पापोलग्नेस्थितोनशुभ-  
इति शुभफलंनददाति दशमेस्थानेसमवस्थितः पापरू-  
पोपिशुभफलोभवति श्रेयस्करोभवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ अन्य-  
च्चशुभाशुभज्ञानमाह इंदुमिति द्विशब्देनद्वितीयंस्थानमु-  
च्यते सप्तमदशमेप्रसिद्धे आयएकादशं रिपुस्थानंपष्ठं  
त्रिशब्देनतृतीयंस्थानमुच्यते एतेषुद्वितीयतृतीयसप्तमद-  
शमारिपुत्रिपुसंस्थितः तमिंदुंचंद्रंगुरुर्जीवःपश्येत्तदा-  
प्रष्टुःशुभफलंलाभादिकंप्रमदाकृतंस्त्रीहेतुकंस्याद्रवेत् लग्न-  
त्रिधर्मेति लग्नंपृच्छालग्नं त्रिशब्देनतृतीयस्थानं धर्म-  
स्थानंनवमं सुतस्थानंपंचमं नैधनमष्टमं एतेषुस्थानेषु-  
पापाःपापग्रहगताःसमवस्थिताःप्रष्टुःकार्यार्थनाशभयदाः  
कार्यस्यकृत्यस्यअर्थस्यधनस्यनाशंविघातंभयंभीतिंदद-

तीत्यर्थः शुभदाःशुभाश्चेति एष्वेवलग्न्यादिपुस्थानेषुशुभाः  
सौम्यग्रहाःसमवस्थिताःशुभदाःशुभफलप्रदाइत्यर्थः ४ ॥

शुभग्रहाःसौम्यनिरीक्षिताश्चविलग्नसप्तमाष्ट-  
मपंचमस्थाः ॥ त्रिपड्दशायेचनिशाक-  
रःस्याच्छुभंभवेद्रोगनिपीडितानाम् ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचितायां  
पट्टपञ्चाशिकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

टीका—अधुनारोगार्तस्यशुभाशुभज्ञानमाह शुभेति  
शुभग्रहाबुधगुरुशुक्राः विलग्नं पृच्छालग्नं सप्तमाष्टमपंचम-  
स्थानानिप्रसिद्धानि एतेपुयथासंभवंशुभग्रहाःसमवस्थि-  
तास्तेचनिरीक्षिताः सौम्यैःशुभग्रहैरेवदृष्टाः एतदुक्तंभवति  
शुभग्रहदृष्टस्थानस्थाःपरस्परंपश्यंतियदा तदाएपयोगेन-  
केवलंयावन्निशाकरश्चंद्रमास्त्रिपड्दशायेचस्याद्भवेत् तृ-  
तीयपष्ठदशमानिप्रसिद्धानि आयमेकादशमेतेपामन्यतमे  
चंद्रमाभवतितदारोगनिपीडितानांव्याधिगृहीतानांशुभ-

मारोग्यं षडेद्रूयात् अर्थदेवयोगासंभवे सत्यशुभं वदेदिति  
योगे सति शुभं व्रूयात् ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां पट्टपं० शुभा-  
शुभाध्यायश्चतुर्थः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ प्रवासचिंताध्यायः ॥

दूरगतस्यागमनं सुतधनसहजस्थितैर्ग्रहैर्लगा-  
त् ॥ सौम्यैर्नष्टप्राप्तिं लघ्वागमनं गुरुसिता-  
भ्याम् ॥ १ ॥ जामित्रैस्त्वथवापष्टे ग्रहः केंद्रेऽ-  
थवा कपतिः ॥ प्रोपितागमनं विद्यात्रिकोणे  
ज्ञेयं सितेपिवा ॥ २ ॥

टीका—अधुना प्रवासचिंताध्यायो व्याख्यायते तत्रा-  
दावेवागमनार्थं योगमाह दूरगतस्येति सुतस्थानं पंचमं धन-  
स्थानं द्वितीयम् सहजस्थानं तृतीयम् एतेषु स्थानेषु लग्नात्ता-  
त्कालिकात् ग्रहैरादित्यादिभिः सर्वैः समवस्थितैः दूर-  
गतस्य विप्रकृष्टस्थितस्य आगमनं संप्राप्तिं वदेत् सौम्यैर्नष्ट-  
प्राप्तिमिति सौम्यैः सौम्यैर्ग्रहैः बुधगुरुसिताक्षीणचंद्रैः ते



वस्थानेषु व्यवस्थितैः नष्टस्यापहतस्य वस्तुनः प्राप्तिलाभं  
 वदेत् तस्यैव प्रवासो नष्टमासीत् स एव वा प्रवासी नष्टोऽदर्शनं  
 गतः तद्दर्शनं भवतीत्यर्थः लघ्वागमनं गुरुसिताभ्यामिति  
 गुरुर्बृहस्पतिः सितः शुक्रः आभ्यामेष्वेव स्थानेषु समवस्थि-  
 ताभ्यां लघ्वागमनं लघुनाल्पेनैव कालेन प्रवासिनामागम-  
 नं प्रवदेत् ॥ १ ॥ अथ योगान्तरमाह जामित्र इति जामित्रं  
 सप्तमं सप्तमस्थाने अथ पष्ठे वा पृच्छालग्नयः समवस्थितः त-  
 था चतुर्णां केंद्राणां च मध्यादन्यतमे केंद्रे वा कपति भवति त-  
 दाप्रोपितस्य प्रवासितस्यागमनं प्राप्तिं विद्याज्जानीयात् त्रि-  
 कोण इति त्रिकोणेन वपंचमेज्ञो बुधः सितः शुक्रः बुधेशुके  
 वा त्रिकोणयोर्नैव मपंचमस्थानयोरेवान्यतमस्थे द्वयोर्वा त्रि-  
 कोणस्थयोः प्रोपितागमनं विद्यादिति ॥ २ ॥

अष्टमस्थे निशानाथे कंटकैः पापवर्जितैः ॥

प्रवासी सुखमायाति सोम्यैर्लाभसमन्वितः ॥ ३ ॥

पृष्ठोदये पापनिरीक्षिते वा पापास्तृतीयोरिषु-

केंद्रगेवा ॥ सौम्यैरदृष्टावधबंधदाःस्युर्नष्टा-  
विनष्टामुपिताश्चवाच्याः ॥ ४ ॥

टीका--अथयोगान्तरमाह अष्टमस्थइति निशाना-  
थश्वंद्रमास्तस्मिन्प्रश्नलगादष्टमस्थे अष्टमस्थानंसमव-  
स्थितेकंडकानिकेंद्राणि लग्नचतुर्थसप्तमदशमानितैःपापव-  
र्जितैः प्रवासीपथिकः सुखेनाक्लेशेनायातिआगच्छति  
सौम्यैःशुभग्रहैःकेंद्रस्थैः प्रवासीलाभसमन्वितःलाभयुतः  
सुखमायाति ॥ ३ ॥ अन्ययोगान्तरमाह पृष्ठोदयइति  
पृष्ठोदयाःभेषकर्कटधन्विमकरमीनाः पृष्ठोदयेपृच्छालग्न्ये  
एतेषामन्यतमे तस्मिंश्चपापनिरोक्षिते अशुभग्रहाव-  
लोकिते वाशब्दोत्रचार्थे एवंविधेयोगेप्रवासिनोवध-  
स्ताडनंबंधोबंधनंभवेत् अथवापापाअशुभग्रहाः लग्ना-  
चतुर्थस्थानेस्थिताः सर्वएतेचसौम्यैः शुभग्रहैरदृष्टाअनव-  
लोकितास्तदाप्रवासिनोनष्टास्तस्मात्स्थानादन्यदेशंगताः  
अथवापापालगाद्रिपुस्थानेवागतास्तेचसौम्यैरदृष्टास्तदा  
प्रवासिनोमुपिताश्चौरैर्वाऽपहृताःस्युर्भवेयुः ५ । ५

नांविकल्पार्थः वधबन्धदाःस्युरितिपापानांविशेषणम् ४

ग्रहोविलग्राद्यतमेगृहेतुतेनाहताद्वादशरा-  
शयःस्युः ॥ तावद्दिनान्यागमनस्यविद्या-  
निवर्तनंवक्रगतैर्ग्रहैस्तु ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविरचि-  
तायांपट्टपंचाशिकायांप्रवासचिंता-  
यांपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

टीका—अधुनाप्रवासिनामागमनकालज्ञानमाह ग्रहो-  
विलग्रादिति विलग्रात्पृच्छालग्राद्यतमेयावत्संख्येराशौ-  
यःकश्चिद्ग्रहःस्थितःसचस्पष्टगतिस्तिष्ठेत् तेनतत्प्रमाणे-  
नद्वादशराशयःआहतागुणिताःकार्याः एतदुक्तंभवति द्वा-  
दशसंख्यमंकमास्थाप्यलग्रात्प्रभृतिग्रहांतरंराशिसंख्यया  
गुणयेत् तत्रयावत्संख्याभवंति तावत्संख्यानिदिनानि  
प्रवासिनःआगमनस्यवियाज्जानीयात् तावद्दिःदिनेः  
पृथिकभागच्छतीत्यर्थः निवर्तनंवक्रगतेरिति अथसप्त-

होवकगतिः- प्रतीपगतिस्तदा तावत्संख्यैर्दिनैःप्रवासिनः  
प्रवासान्निवर्तनंभवति ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांषट्पंचाशिकावि-  
वृतौप्रवासचिंताध्यायःपंचमः ॥ ५ ॥

अथनष्टप्राप्त्यध्यायः ॥

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतेऽपिवा ॥

स्थितंतत्रैवतद्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १ ॥

टीका-अथनष्टप्राप्त्यध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव  
चौरज्ञानमाह स्थिरोदयइति स्थिरावृषसिंहवृश्चिककुं-  
भाःएषामन्यतमस्योदयेतत्काललग्नतांप्राप्ते अथवायस्य  
कस्यचिद्राशेरुदयेतत्कालंस्थिरनवांशकेवर्तमाने अथ-  
वायस्यकस्यचिद्राशेर्वर्गोत्तमनवांशकोदये वर्गोत्तमनवां-  
शाश्वरादिपुप्रथममध्यमपर्यंतगाः इतिवर्गोत्तमनवांशकानां  
लक्षणंप्रोक्तम् एवंलग्नस्यवर्गोत्तमगतेनवांशकेवायदपहंत  
द्रव्यंनतंस्वकीयेनात्मीयेनैवकेनचिच्चोरितमपहंतं

तत्रैवतस्मिन्नेवस्थानेस्थितम् अन्यथाअपरेणापहृतं त-  
स्मात्तत्तत्स्थानाच्चलितमिति ॥ १ ॥

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥

द्वारदेशेतथामध्येगृहांतेचवदेद्धनम् ॥ २ ॥

पूर्णःशशीलग्नगतःशुभोवाशीर्षोदयेसौम्य

निरीक्षितश्च ॥ नष्टस्यलाभंकुरुतेतदाशु

लाभोपयातोवलवाञ्छुभश्च ॥ ३ ॥

टीका—अधुनास्थानज्ञानमाह आदिमध्येति द्रेष्काणाः  
प्रथमपंचमनवाधिपानामितिद्रेष्काणलक्षणंप्रागुक्तम् आ-  
दिद्रेष्काणःप्रथमःमध्येद्वितीयः अवसानेतृतीयः विलग्नं  
पृच्छालभं विलग्नतःविलमात्तात्काललयादित्थंभूतेषुद्रे-  
ष्काणेषु यथासंख्यंहृतंधनंविचं द्वारदेशेतथामध्येगृहांते  
चधनंस्थितंवदेत् एतदुक्तंभवति लग्नस्यप्रथमद्रेष्काणो-  
दयेहृतंधनंद्वारदेशेस्थितंवदेत् द्वितीयेद्रेष्काणोदयेगृह-  
मध्येत्रलस्यानसमीपे तृतीयेद्रेष्काणोदयेगृहांतेवेश्मप-  
ञ्चिमभागेवदेद्गृयादिति ॥ २ ॥ अधुनालाजालाजज्ञा-

नमाह पूर्णःशशीति पूर्णःपरिपूर्णमंडलःशशीचंद्रः सच  
लग्नगः पृच्छालभेसमवस्थितः अथवाशीर्षोदयेलग्नगते  
तत्रैवशुभःसौम्यग्रहःसमवस्थितः सचसौम्यैःशुभग्रहैरेव  
निरीक्षितोदृष्टः भवति तदाआशुक्षिप्रमेवनटस्यापहतस्य  
धनादेर्लाभंप्राप्तिकुरुतेविधत्ते लाभइति अथवालगाच्छाभे  
चैकादशेस्थानेशुभःसौम्यग्रहः बलवान्वीर्यवानुपयातः  
प्राप्तोभवति तथापि चशब्दान्नटस्याशुलाभंकुरुते अर्थादे-  
वोक्तयोगानामभावेहतंनलभ्यतइति ॥ ३ ॥

दिग्वाच्याकेंद्रगतैरसंभवेवावदेद्विलग्नक्षात् ॥  
मध्याच्च्युतैर्विलग्नान्नवांशकैर्योजनावा-  
च्या ॥ ४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरात्मजपृथुयशोविर-  
चितायांपट्पंचाशिकायानष्टप्राप्त्य-  
ध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥

टीका—अधुनादिगध्वनोःप्रमाणमाह दिग्वाच्येति प्रा-  
च्यादीशारविसितकुजराहुयमेंदुसौम्यवाक्पतयःइतिग्रहा  
णांदिशउक्ताः तत्रकेंद्रगतैर्ग्रहैर्दिग्दशावाच्यावक्तव्या

त्कालिकलग्नस्ययःकश्चिद्ब्रह्मकेंद्रेसमवस्थितःतस्ययादि-  
 क् तस्यांहतंविचंगतंवदेत् तद्यथा सूर्येलग्नचतुर्थसप्तमद-  
 शमानामन्यतमस्थानस्थेपूर्वस्यामेव आग्नेय्यांशुके भौमे  
 दक्षिणस्यां राहैनैर्ऋत्यां सौरौपश्चिमायां बुधेउत्तरस्यां  
 जीवेईशान्यामिति द्वयोर्बहुपुवाकेंद्रगतेष्वधिकबलादसं-  
 भवेवावदेद्विलग्नर्क्षात् अजवृषमिथुनकुलीराःपंचमनवमैः  
 सहेंद्राद्याइतिराशीनांदिशाउक्ताः असत्यविद्यमानेकेंद्रग्रौ  
 विलग्नर्क्षात्विलग्नराशितोदिशंवदेद्ब्रूयादिति तद्यथामेपरि  
 हधनुःपुलगेपुहृतंविचंपूर्वस्यांदिशिगतम् एवंवृषकन्यामक-  
 रेपु दक्षिणस्यांमिथुनतुलाकुंभेषु पश्चिमायांवृश्चिककर्कट-  
 मीनेपूत्तरस्यांमध्याच्च्युतश्चलितैरिति विलग्नप्रश्चलग्नंतस्य  
 नवांशकानवभागास्तैर्मध्यात्पंचमनवमांशकाच्च्युतैश्चलि-  
 तैर्योजनावाच्या एतदुक्तंभवति प्रश्चलग्नेप्रथमनवांशका-  
 त्प्रभृतिपंचमनवांशकंयावद्धर्ततेतावद्धृतंविचंतस्मिन्नेवदेशे  
 ग्रागुक्तायांदिशिगतंवदेत् पंचमादंशकाद्यावतः परतो-

शकाःअतीतास्तावतियोजनानितद्वित्तंप्रागुक्तायांदिशि  
गतमिति ॥ ४ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांपट्टपंचाशिकाविवृ-  
तौनष्टप्राप्त्यध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥

अथ मिश्रकाध्यायः ॥

विपमस्थितेऽर्कपुत्रेसुतस्यजन्मान्यथांङ्ग-  
नायाश्च ॥ लभ्यावरस्यनारीसमस्थितेतो-  
ऽन्यथावामम् ॥ १ ॥

टीका—अथमिश्रकाध्यायोव्याख्यायते तत्रादावेव  
गर्भिणीपुत्रदुहितृजन्मज्ञानंवरस्यकन्यालाभज्ञानंचाह वि  
पमस्थितेइति अर्कपुत्रेशनैश्वरेप्रश्नलगाद्विपमस्थानस्थिते  
तृतीयपंचमसप्तमनवमैकादशानिविपमस्थानानि एषाम-  
न्यतमस्थानस्थेप्रष्टुःसुतस्यजन्मप्रादुर्भावंवेदेत् नन्वत्रल-  
घ्नस्यकथंविपमस्थानस्यगणनाक्रियते उच्यते अत्राचार्यो  
वराहमिहिरोज्ञापकः तथाच विहायलग्नंविषमर्क्षसंस्थः  
सौरोपिपुंजन्मकरोविलग्नात्।अन्यथांगनायास्तु अन्यः



थाअन्यप्रकारेणस्थितेर्केपुत्रेलग्न्यादंगनायाःस्त्रियाःजन्मव-  
देत् तेनद्वितीयचतुर्थपष्ठाष्टमदशमद्वादशानामन्यतमे  
स्थानस्थितेसौरे वरस्यनारीकन्यालभ्येतिवदेत्समस्थिते  
लग्नाद्विपमस्थानस्थेवामंविपरीतं नलभ्यतइत्यर्थः ॥ १ ॥

गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगःशशी  
लग्नात् ॥ भवतिचविवाहकर्तात्रिकोणके-  
द्रेषुवासौम्याः ॥ २ ॥ चन्द्रार्कयोःसप्तम-  
गौसितार्कीसुखेष्टमेवापितथाविलग्न्यात् ॥  
द्वितीयदुश्चिक्वगतौतथाचवर्षासुवृष्टिप्रवदे  
न्नराणाम् ॥ ३ ॥

टीका—अधुनाविवाहज्ञानमाह गुरुरविसौम्यैरिति  
गुरुर्जीवोरविःसूर्यः सौम्योबुधः एतेर्दृष्टोभवलोकितः  
कीदृशः त्रिसुतमदायारिगः त्रिशब्देनतृतीयस्थानं सुत-  
स्थानंपंचमंमद्रस्थानंसप्तममायएकादशमरिस्थानंपष्ठं ल-  
ग्न्यादित्येपांस्थानानामन्यतमस्थानेगतः समवस्थितःश-  
शीचन्द्रोगुरुरविसौम्यैर्दृष्टोयदिभवतितदाप्रहः विवाह-

स्यपाणिग्रहणस्यकर्ताविधाताभवति त्रिकोणकेंद्रेष्विति  
 अथवासौम्याः शुभग्रहाः त्रिकोणकेंद्रेषुनवपञ्चमल-  
 ग्रचतुर्थसप्तमदशमेषुयथासंभवंभवन्ति तदाप्रष्टुःविवाहो  
 भवतीत्यर्थः वाशब्दोऽन्ययोगव्यवच्छेदकार्थः ॥ २ ॥  
 अधुनावर्षासमयेवृष्टिज्ञानमाह चन्द्रार्कयोरिति चन्द्रः  
 शशी अर्कःआदित्यः अनयोःसप्तमगौसितार्कीशुक्रशनी  
 यथासंभवंयदिभवतः अथवाविलग्रादेवतेनैवप्रकारेणतावे-  
 वसितार्कीद्वितीयस्थानेदुश्चिक्येवाभवतस्तयोर्वास्थानयो  
 स्तदावर्षासुवृष्टिर्वर्षणंवेदेत् ॥ ३ ॥

सौम्याजलराशिस्थास्तृतीयधनकेंद्रगाःसि  
 तेपक्षे ॥ चन्द्रेवाप्युदयगतेजलराशिस्थे  
 वदेद्वर्षम् ॥ ४ पुंवर्गैलग्रगतेपुंग्रहदृष्टेवला-  
 न्वितेपुरुषः ॥ युग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेस्त्रीबुधयुक्ते  
 तुगर्भयुता ॥ ५ ॥

टीका—अधुनाप्रष्टुःप्रश्नकालेवृष्टिज्ञानमाह सौम्याइ-  
 ति कर्कमीनमकरकुंभाःजलराशयः सौम्याःशुभग्रहाः

जलराशिपुस्थिताः सितेपक्षेशुक्लेमासाद्धै पुनरयंविशेषः  
 तृतीयधनकेन्द्रगा यदिभवन्ति तृतीयद्वितीयलग्नचतुर्थ  
 सप्तमदशमानि एतेपुयथासंभवंगताः वाशब्दोन्ययोगा  
 पेक्षायाम् अथवाउदयगतेचंद्रेतत्रजलराशिस्थेपृच्छायां  
 चवर्षासुवृष्टिप्रवदेत् ॥ ४ ॥ अथगर्भिणीनांकिंजायत-  
 इत्येतज्ज्ञानमाह पुंवर्गेति पुंस्त्रीक्रूरावितिराशीनांपुंस्त्री  
 संज्ञाजातकेउक्ताः मेपमिथुनसिंहतुलाधन्विकुंभाःपुराश-  
 यः वर्गलक्षणंप्रागुक्तम् पुंवर्गेपुरुपराशिवर्गे लग्नगतेता-  
 त्काललग्नतांप्राप्ते तस्मिन्पुंग्रहदृष्टेनरग्रहावलोकिते क्लीब-  
 पतीबुधसौरौचंद्रसितौयोपितांनृणांशोपाइतिग्रहाणांपुंस्त्री-  
 नपुंसकत्वमभिहितं तेनपुंग्रहारविभौमजीवाः एतेपाम-  
 न्यतमेनलग्नगतेदृष्टेतस्मिंश्चतथाभूतेलग्नेवलान्वितेवीर्ययु-  
 क्तेचपुरुषोजायते अधिपयुतोदृष्टोवाबुधजीवनिरिक्षित  
 श्वयोराशिः सभवतिबलवान् यंदादृष्टोपिवाशेपैरितिलग्न-  
 बलमुक्तंयुग्मेस्त्रीग्रहदृष्टेइति युग्मेयुग्मराशौस्त्रीसंज्ञकेवृषा-  
 दौगतेस्त्रीग्रहौचंद्रसितौताभ्यामन्यतमेनावलोकितेबलयु-

केचन्नीकन्याजायते सामान्यप्रश्नलभे बुधयुक्तेबुधेनसंयु-  
केस्त्रीगर्भयुतासगर्भावर्तते अद्यापिप्रसूयतइत्यर्थः ॥ ५ ॥

कुमारिकांवालशशीबुधश्चवृद्धांशनिःसूर्य-  
गुरुप्रसूताम् ॥ स्त्रीकर्कशांभौमसितौविध-  
त्तएवंवयःस्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥ ६ ॥

टीका—अथप्रष्टुःकीदृशीस्त्रीपुरुषोवाचेतसिवर्ततइत्ये-  
तत्परिज्ञानमाह कुमारिकामिति शुक्लप्रतिपत्प्रभृतिदश-  
म्यंतयावच्छशीवालः एकादशीप्रभृति कृष्णपंचमीया-  
वद्युवापठचाद्यमावास्यांतयावद्बुद्धः तत्रपृच्छालभ्य-  
दिसवालशशीवालचंद्रःपश्यतिलभेवांतथाभूतःस्थितःत-  
दाप्रष्टुःकुमारिकांवदेत् एवमेवबुधःपश्यति तत्रावस्थि-  
तस्तथापिकुमारिकामर्थादेवयौवनस्थेचंद्रेयौवनोपेतांबु-  
द्धेवृद्धामिति केचिद्वालांकुमारींचशशीबुधश्चेतिपठं-  
ति शशीवालांकरोति आपुष्पंयावत् पुष्पदर्शनंयाव-  
दित्यर्थः वालांस्त्रियं बुधः कुमारिकामनूढांकरोतिएवं  
शनिःसौरोविगतमौवनांजराभिभूतांकरोतिसूर्योऽर्क

वृहस्पतिः एतौ प्रसूतां प्रसवयुतां स्त्रियं विधत्तः कुरुतः भौमो  
 ऽगारकः सितः शुक्रः एतौ कर्कशामतिदारुणां स्त्रियं कुरुतः  
 एवमनेन प्रकारेण वयःशरीरावस्थास्याद्भवेत् पुरुषेषु चै-  
 वमिति पुरुषेष्वपि पृच्छासमये प्रष्टुः वयोज्ञानमेवमनेन प्रका-  
 रेण वदेत् ॥ ६ ॥

आत्मसमंलग्नगते भ्राता सहजस्थितैः सुतः सु-  
 तगैः ॥ मातावाभगिनीवाचतुर्थगैः शत्रुगैः  
 शत्रुः ॥ ७ ॥ भार्यासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्मा-  
 श्रितो गुरुर्दशमे ॥ स्वांशपतिमित्रशत्रुपु-  
 त्तथैव वाच्यं वलयुतेषु ॥ ८ ॥

टीका—अथ पृच्छां पृच्छति कस्य संवन्धिनीचिंतामेमन  
 सिवर्तते इत्येतत्परिज्ञानमाह श्लोकद्वयेन आत्मसममिति ग्र  
 हैरादित्यादिभिः सबलैर्लग्नगतेर्लग्नस्थैः प्रष्टुः आत्मसमंस्व-  
 शरीरतुल्यः कश्चिन्मनसिवर्तत इति तत्कार्यं वक्तव्यमित्ये  
 वं लग्नमात्सहजस्थितैस्तृतीयगैः भ्राता सुतगैः पंचमस्थानस्थैः  
 पुत्रः पुत्रः चतुर्थगैश्चतुर्थस्थानस्थैर्माता जननी भगिनी चै-

तिवाच्यम् शत्रुगैःपष्ठस्थानस्थैःरिपुचिंता ॥ ७ ॥ भार्येति  
लग्नत्सप्तमस्थानाश्रितैःसबलैर्ग्रहैःपत्नीवाच्या नवमेनव-  
मस्थानस्थैर्धर्माश्रितोधर्मयुक्तइतिचिंतावाच्या दशमेगुरु-  
राचार्यइति स्वांशपतिरित्यादि स्वश्वासावंशश्चस्वांश  
आत्मीयो नवभागस्तस्यपतिःस्वामीपृच्छालमेतत्कालंयो-  
नवांशकडदितः तत्पतिर्यदालमस्थो भवति तदाप्रष्टुः आ-  
त्मचिंतेतिवाच्यम् अथस्वांशपतिमित्रंतत्काललमेस्थितं  
तदामित्रंचितितमितिवाच्यम् अथस्वांशपतिशत्रुःरिपु-  
स्तत्कालंलगेस्थितस्तदाशत्रुचिंतागतेतिवाच्यम् अथ-  
निर्दिष्टस्थानेषुद्वौग्रहौबहवोवाहवन्ति तदातेषामध्यायो  
बलयुतःसयत्रस्थितःतंप्रष्टुःचित्तेगतंस्थितमितिवाच्यम्  
तथैवतेनैवप्रकारेणयथाभिहितेषु बलयुक्तेषु वीर्यवत्सु-  
मध्यात्कार्यंवाच्यम् शत्रूमंदासितौसमश्चशशिजोमित्रा-  
णिरोपारवेरित्यादिनाग्रंथेचजातकेमित्रशत्रुविभागःप्रद-  
र्शितइति ॥ ८ ॥

चरलगेचरभागेमध्याद्धृष्टेप्रवासचिंतास्या-  
त् ॥ अष्टःसप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तोयदिनव

(५०) - पदपञ्चाशिका ।

क्री ॥ ९ ॥ अस्तेरविसितवक्रैःपरजायां  
स्वांगुरौबुधेवेश्याम् ॥ चंद्रेचवयःशशिव  
त्प्रवदेत्सौरेंऽत्यजातीनाम् ॥ १० ॥

टीका—अधुनाप्रवासचिंताज्ञानमाह चरलग्नेइति  
चराणामेपकर्कटतुलामकराणामन्यतमेलग्नेतत्रतत्का-  
लम् चरभागे चरनवांशकेउदितस्तस्मिंश्चरलग्नेमध्यात्पं  
चमनवांशकात्भ्रष्टेच्युते पष्ठादिकमंशंतत्रवर्ततइत्यर्थः  
प्रष्टुःप्रवासचिंतास्याद्भवेत् प्रवासनिमित्तंचिंताभवेदित्य-  
र्थः अत्रैवनिश्चयमाह भ्रष्टइति सप्तमभवनंपृच्छालग्नात्स-  
प्तमोराशिस्तस्मात् तत्कालंयदिकश्चिद्ब्रह्मोभ्रष्टःप्रच्युतः  
चलितःसचभौमादिकस्तदाप्रवासीपुनर्निवृत्तोनिवर्ततइ-  
त्यर्थः प्रवासचिंतातेनकिंतुनयास्यति यदिनवक्रीति यो-  
सौसप्तमभवनाद्भ्रष्टग्रहः सयदिवक्रीप्रतीपगतिर्नभवति त-  
दानिवृत्तएववाच्यः अथवक्रीतदावृत्तोयास्यतीतिवाच्य-  
म् ॥ ९ ॥ अथकीदृश्यास्त्रियासहमेसंयोगआसीदित्येतज्ज्ञान-  
माह अस्तेरविसितवक्रैरिति रविरादित्यःसितःशुक्रःव-

कौंगारकः एतेषामन्यतमेपृच्छालगनादस्तेसप्तमेस्थानेप-  
 रजायांपरपत्नीं परभार्ययासहसंयोगआसीत् एवंगुरौजी-  
 वेस्थितेस्वामात्मीयांस्त्रियमितिप्रवदेत् बुधवेश्यांसाधार-  
 णस्त्रियंचंद्रैचैवंसाधारणस्त्रियमेववदेत् तथातेनैवप्रकारेण-  
 सौरेशनैश्वरेसप्तमेत्यजातीनांनिकृष्टजातीनांस्त्रियमगम्या-  
 मितिप्रवदेत् वयःशशिवदिति तासांसर्वासांस्त्रीणांशशि-  
 वचंद्रवद्वयःशरीरावस्थांप्रवदेदिति बालचंद्रेबालांयौवनो-  
 पेतांवृद्धेवृद्धांचंद्रप्रविभागःप्रागेवदर्शितइति ॥ १० ॥

मंदःपापसमेतोलग्नान्नवमेशुभैरयुतदृष्टः ॥

रोगार्तःपरदेशेचाष्टमगोमृत्युकरएव॥११॥

सौम्ययुतोऽर्कःसौम्यैःसंदृष्टश्चाष्टमर्क्षसंस्थ-  
 श्च ॥ तरुमादेशादन्यंगतःसवाच्यःपिता

तस्य ॥ १२ ॥

टीका-अथरोगार्तस्यपरदेशस्थितिज्ञानमाह मं-

दइति मंदःमौरःसचपापसमेतोरविभौमक्षीणचंद्राणा-

मन्यतमेनपुक्तस्तथाभूतो लग्नात्पृच्छालग्नान्नवमे स्थाने



स्थितस्तत्रचशुभैरयुतदृष्टः तत्रचशुभग्रहाणामन्यतमेनयु-  
 क्तोनाप्यवलोकितस्तदारोगार्तःरोगोज्वरादिस्तेनार्तःपी-  
 डितः परदेशेऽन्यस्मिन्ग्रामादौस्थितःतथाऽनेनैवलक्षणे-  
 नयुक्तःसोरोलग्नादष्टमेस्थानेगतःसमवस्थितस्तदातस्यै-  
 वरोगार्तस्यमरणं करोति ॥ ११ ॥ अथकश्चित्पृच्छति-  
 मदीयःपितान्यदेशस्थस्तत्रकिमयापितिष्ठति अथवाऽ-  
 न्यदेशंगतइतिएतज्ज्ञानमाह सौम्येति अर्कःसूर्यःसौम्येः  
 शुभग्रहैर्युतःसहितस्तेपामन्यतमेनचदृष्टोवलोकितोभवति  
 तथाभूतोलग्नाच्चाष्टमर्क्षसंस्थितस्तत्संस्थोष्टमस्थानमुपग-  
 तोभवति तस्माद्देशाद्ग्रामादिकादन्यदेशांतरंगतः तस्य  
 प्रष्टुः पिताजनकः प्राप्तइतिवाच्यः अन्यथातत्रैव  
 स्थितः ॥ १२ ॥

अंशकाज्जायतेद्रव्यंद्रेष्काणैस्तस्कराःस्मृ-  
 ताः ॥ राशिभ्यःकालदिग्देशावयोज्ञातिश्च  
 लग्नपात् ॥ १३ ॥

इति श्रीविराहमिहिरात्मजपृथुयशो-  
 विरचितापट्टपञ्चाशिका समाप्ता ॥

टीका— अधुनाहृतस्यार्थस्यस्वरूपतस्करकालदि-  
 देशानांज्ञानंतस्करस्यवयरूपज्ञानंचाह अंशकादिति  
 अंशकाद्यस्यतात्कालिकस्यनवमभागाद्द्रव्यमपहतंधा-  
 तुमूलजीवारूपंतज्जायते एतत्पूर्वमेवव्याख्यातम् स्वां-  
 शैविलग्रेयदिवात्रिकोणइति तस्यचराशितुल्योवर्णोव-  
 क्तव्यः तथाचलघुजातकेप्रोक्तम् अरुणसितहरितपाट-  
 लपांडुविचित्रासितेतरपिशंगाः पिंगलकवुरिबभ्रुकमलि-  
 नारुचयोयथासंख्यमिति तस्यचदीर्घमध्यह्रस्वत्वंनवां-  
 शकवशाज्ज्ञेयम् तेनचकुंभमीनमेपवृषाह्रस्वाः मिथुन-  
 कर्कटधन्विमकरामध्याः सिंहवृश्चिककन्यातुलादीर्घास्त-  
 थाचास्मदीयेप्रश्नज्ञाने मेपवृषकुंभमीनाह्रस्वायुगकर्किचा-  
 पधरमकराः मध्याहरियुवतितुलादयः स्मृतादीर्घाइतिह-  
 स्वंपरिवर्तुलंमध्यमायतंदीर्घम् अंशकपतौसबलेतःआ-  
 सारमल्पबलेमुखीनीचस्थितेस्तमितेवापिनष्टप्रायमेव ए-  
 वमंशकाद्द्रव्यंजायते द्रेष्काणैर्लभत्रिभागैस्तस्कराध्वोराः  
 स्मृताउक्ताः यादृशीद्रेष्काणस्याकृतिस्तादृशीएवतस्क-

रस्यवक्तव्या तद्यथा मेघप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषःपरशुहस्तः  
 कृष्णोरक्तनेत्रःरौद्रः द्वितीये द्रेष्काणेस्त्रीलोहितांवरास्थू-  
 लोदरीदीर्घमुखैकपादा तृतीयेद्रेष्काणेपुमान् क्रूरःकपि-  
 लोरक्ताम्बरःदंडहस्तः वृषस्यप्रथमद्रेष्काणेस्त्रीकुंचित-  
 लूनकेशास्थूलोदरीदीर्घपादा द्वितीयेनरःकलाविद्वलांग-  
 लशस्त्रकर्मणिकुशलः तृतीयेनरोवृहत्कायः मिथुनस्य ।  
 प्रथमद्रेष्काणेस्त्रीरूपान्विताहीनप्रजा द्वितीयेपुरुषः उद्या-  
 नसंस्थितः अपत्यरहितःकवचीधनुष्मान् तृतीयेपुमान्  
 रत्नसूपितःपंडितोधनुष्मान् कर्कटप्रथमेपुरुषः हस्ति-  
 दशशरीरःसूकरमुखः द्वितीयेस्त्रीयौवनापेताकर्कशाभर-  
 ण्यस्था तृतीयेपुरुषः सर्पवेष्टितः नौस्थःसुवर्णाभरणान्वि-  
 तःसिंहप्रथमेशाल्मलीसंस्थोगृध्रजन्तुशुकाननः द्वितीयेपु-  
 रूपोधनुष्मान् नताग्रनासः तृतीयेनरःकूर्चीकुंचितकेशः  
 दंडहस्तः कन्याप्रथमे स्त्रीपुण्ययुता पूर्णेनघटेनोपलक्षिता  
 दग्धांवरा गुरुकुलंवाञ्छति द्वितीयेपुरुषोगृहीतलेखनिः  
 कामोविस्तीर्णकार्मुकः तृतीयेस्त्रीगौराकुंभकुचा घटहस्ता

देवालयेप्रवृत्ता तुलाप्रथमेपुरुषःतुलाहस्तः वीथ्यापणगतः  
 उन्नतहस्तःभाण्डं चितयति द्वितीयेपुरुषः कलशधरोगृध्र-  
 मुखोक्षुधितस्तृपितश्च तृतीयेपुरुषः दीर्घमुखोधनुष्पाणिः  
 तृश्चिकप्रथमेस्त्रीनग्रास्थानच्युतासर्पनिबद्धपादामनोरमा  
 द्वितीयेभर्तृकृतेभुजंगावृतशरीरस्थानमुखान्यमग्निवांछ-  
 ति तृतीयेपुरुषश्चिपिटवक्रःधनुःप्रथमेपुरुषोधनुष्मान् दि-  
 तीयेस्त्रीसुरूपागौरवर्णा तृतीयेपुरुषोदंडहस्तःकूर्ची मकर-  
 प्रथमेपुरुषोरोमशःस्थूलदन्तोबंधमृत्तुरौद्रवदनोद्वितीयेस्त्री  
 श्यामाऽलंकारान्विता तृतीयेपुरुषः दीर्घमुखोधनुष्मान्  
 कुंभप्रथमेपुरुषःगृध्रतुल्यमुखःसकंबलःद्वितीयेस्त्रीरक्ताम्ब-  
 रा तृतीयेपुरुषःश्यामः मीनप्रथमेद्रेष्काणेपुरुषोनौस्थः  
 द्वितीयेस्त्रीगौरानौस्था तृतीयेद्रेष्काणेपुरुषःनग्नःमांससर्प-  
 वेष्टितांगःएतद्बृहज्जातकेवराहमिहिरेणप्रोक्तम् एवंद्रेष्काणे  
 तस्कराउक्ताइति राशिभ्यउक्ताइति राशिभ्यःकालदि-  
 ग्देशाः इति राशीनांकालविभागः मेषायाश्चत्वारःसध-  
 न्विमकराःक्षपाबलाज्ञेयाइति जातकेउक्तम् तेनमेषवृष-

मिथुनकर्कटधन्विमकराणामन्यतमेलग्नेसंस्थेरात्रावपह-  
तम् सिंहकन्यातुलावृश्चिककुंभमीनानामन्यतमेदिवाल-  
ग्नेस्थितेदिवागतामिति एवंकालदिङ्मेपसिंहधनुपिपूर्वस्यां  
गतम् वृषकन्यामकरैर्दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुंभैःपश्चिमा-  
यां कर्कटवृश्चिकमीनैरुत्तरस्यांदिशिगतमिति अथमेप-  
लग्नेपृच्छाकालेस्थितेमेपेचरेभूमौवृषेतुलादौमिथुनेगीतनृ-  
त्यस्थानेसंग्रामभूमौवा कर्कटकेजलसमीपे सिंहेअरण्य-  
भूमौ कन्यायांनौसमीपेतुलायामापणगृहेवृश्चिकेविलेश्वन्ने  
धनुपिसंग्रामेचप्राकारभूमौमकरेजलसमीपे कुंभेशिल्पगृहे  
भांडोपस्करसमीपे मीनेजलसमीपइति खचराश्वसर्वेइति-  
बृहज्जातकेप्रोक्तम् वयोजातिश्वलग्नपादिति लग्नपात्  
लग्नेशात् चौरस्यवयःप्रमाणंजातिंचवदेत् तथाचसंहि-  
तायाम् वयांसितेपांस्तनपानवाल्पव्रतस्थितायीवनमध्य  
वृद्धाः अतीववृद्धारविचंद्रभौमज्ञशुकवाग्मीनशनेश्वराणा  
मिति एवंचंद्रेलग्नपतौमिमेतुचतुर्थवर्षाधिकः वृधे  
ब्रह्मचारीद्वाद

संस्कृतटीकासहिता । ( ५७ )

ध्यवयः स्वपंचाब्दः सूर्ये सप्तत्यब्दः वृद्धः सौरितीव वृद्धः अशी-  
त्यब्दः जातिः ब्राह्मणादिः जीवसितौ विप्राणां क्षत्रस्यारो-  
ष्णगूविशांचंद्रः शूद्राधिपः शशिसुतः शनैश्चरः संकरभवा-  
त्तामिति ॥ १३ ॥

इति श्रीमद्दोत्पलविरचितायां पट्टपंचाशिकावि-  
वृतौ मिश्रकाध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-  
खेमराज श्रीकृष्णदास,  
“ श्रीवेंकटेश्वर ” छापाखाना-मुंबई.

# जाहिरात।

## ज्योतिषग्रंथाः ।

| ग्राम.  | रु० भा० |
|---|---------|
| शीलावती सान्वय भापाटीका अत्युत्तम ...                                     | १-८     |
| बृहज्जातकसटीक भद्रोत्पली टीकासमेतजिल्द                                    | १-८     |
| बृहज्जातकमहीधरकृतभापाटीका अत्युत्तम...                                    | १-८     |
| वर्षदीपकपत्रीमार्ग ( वर्षजन्मपत्र बनानेका )                               | ०-४     |
| मुहूर्त्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफ् रु० १ ग्लेज                            | १-८     |
| मुहूर्त्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका...                                       | २-८     |
| ताजिकनीलकंठीसटीक तंत्रत्रयात्मक ...                                       | १-०     |
| ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत<br>भापाटीका अत्युत्तम टैपकी छपी ... | १-८     |
| ज्योतिषसार भापाटीकासहित ...   | १-०     |
| मुहूर्त्तचिंतामणिभापाटीका महीधरकृत ...                                    | १-०     |
| मानसागरीपद्धति ( जन्मपत्रबनानेमेंपरमोपयोगी )                              | १-०     |

# जाहिरात.

नाम,

रु० आ०

|   |        |      |      |
|---|--------|------|------|
| ग्रहलाघव सान्वय सोदाहरण भाषाटीकासमेत स्पष्ट |        |      |      |
| उदाहरण गणिताभ्यासियोंको परमोपयोगी           | १-४    |      |      |
| जातकसंग्रह ( फलादेश परमोपयोगी )             | ...    | ०-१२ |      |
| चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका                    | ....   | ...  | ०-४  |
| जातकालंकारभाषाटीका                          | ...    | ...  | ०-६  |
| जातकालंकारसटीक                              | ... .. | ...  | ०-६  |
| जातकाभरण                                    | ... .. | ...  | ०-१२ |
| पञ्चचंडेश्वर भाषाटीका                       | ...    | ...  | ०-१२ |
| पंचपक्षी सटीक                               | ... .. | ...  | ०-४  |
| पंचपक्षी सपरिहार भाषाटीकासमेत               | ...    | ...  | ०-६  |
| लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित               | ...    | ...  | ०-३  |
| मुहूर्त्तगणपति ❀                            | ... .. | ...  | ०-१२ |
| मुहूर्त्तमातृंड संस्कृत टीका भाषाटीकासहित   | १-०    |      |      |
| शीघ्रबोधभाषाटीका                            | ...    | ...  | ०-६  |
| षट्पंचाशिका भाषाटीका                        | ... .. | ...  | ०-४  |



## जाहिरात.

| क्र० | नाम.                                       | ह० भा० |
|------|--|--------|
|      | शुवनदीपक सटीक ४ आ० भाषाटीका ...            | ०-८    |
|      | जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्यायका ...           | ०-६    |
|      | रमलनवरत्न... ..                            | ०-८    |
|      | बृहत्पाराशरी ( होरा ) ... ..               | ६-०    |
|      | सर्वार्थचिंतामणि ... ..                    | ०-१२   |
|      | लघुजातकसटीक ... ..                         | ०-५    |
|      | लघुजातक भाषाटीका ... ..                    | ०-८    |
|      | सामुद्रिकभाषाटीका ... ..                   | ०-४    |
|      | सामुद्रिक शास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका ... | १-४    |
|      | यवनजातक ... ..                             | ०-२    |
|      | पंचांगतिथिपत्र संवत् १९५४ का ...           | ०-१ ॥  |
|      | पंचांग सं० १९५४ पं०महीधरकृत ...            | ०-४    |
|      | पंचांग १० वर्षका (ज्योतिर्विदोंकोलाभदायक ) | १-८    |
|      | हायनरत्न ... ..                            | १-८    |
|      | अर्धप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इस्में-तेजी    |        |
|      | मंदी वस्तु देखनेका विचार है ... ..         | ०-४    |

# जाहिरात.

नाम.

ख० भा०

|   |     |     |      |
|---|-----|-----|------|
| तिषकी लावणी   | ... | ... | ०--१ |
| नवसन्तराज भाषाटीकासहित इसमें<br>नाप्रकारके शकुन वर्णित हैं ऐसा पूर्ण<br>कुनका ग्रन्थ और नहीं छपा है   | ... | ... | ३--० |
| पोतभाषाटीका   | ... | ... | ०-५  |
| गंडिका मूल ४ आने और भाषाटीका  |     |     | ०-१० |
| दिसारिणी उदाहरणसहित   | ... | ... | ०-८  |
| कुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)   |     |     | १-०  |
| योनिधि  | ... | ... | ०-२  |
| बोध ( ज्योतिष )   | ... | ... | ०-१२ |
| अंतद्वैवज्ञविनोद ज्योतिष भाषा—जिसमें<br>गोल और खगोल विद्या सूर्यसिद्धांतका<br>शहरण और पंचांग बनानेकी पद्धति आ-<br>महर्ष्य समर्ष्य चमत्कारी योगों सहित<br>और धर्मशास्त्रसहित | ... | ... | २-०  |

|   |     |     |     |
|---|-----|-----|-----|
| संकेतनिधि सटीक पं० रामदत्तजीकृत इसमें<br>संस्कृत काव्यरचना बहुत सुंदर है, और<br>जन्मपत्र देखनेके चमत्कारी योग बड़े<br>विलक्षण और अनुभवसिद्धविद्या करके<br>विभूषित हैं | ... | ... | १-९ |
| मुकुन्दविजय चक्रों समेत   | ... | ... | ०-१ |
| पद्मकोप भाषाटीका ( ज्योतिष )  | ... | ... | ०-२ |
| स्वमप्रकाशिका भाषाटीका  | ... | ... | ०-३ |
| स्वमाध्याय भाषाटीका   | ... | ... | ०-२ |
| परमसिद्धान्त ज्योतिष ( यह ग्रन्थ ज्योतिष-<br>कके ज्ञानमें अत्यंत उपयोगी है )  | ... | ... | २-० |
| विश्वकर्माप्रकाश भाषाटीका   | ... | ... | १-८ |
| विश्वकर्मविद्याप्रकाश [ घर बनानेकी सम्पूर्ण<br>क्रिया वर्णित है ]   | ... | ... | ०-६ |
| सूर्यसिद्धान्त संस्कृतटीका और भाषाटीका<br>समेत ( ज्योतिष )  | ... | ... | २-० |